

इहर्गनियनिष्ठाधनमलुनवाय॥
मृक्षानवकमस्थवृ धर्मवर्कमृदा॥

युध्वं वज्र॥

दक्षिण नल॥

यष्टिम यम॥

उरुन विष्टवज्र॥

अम वज्रमा॥

नेमथ ध्वज॥

वायथ स्वज॥

ॐ नम नृज॥

वजावलि वरिन्वा॥

वाक्क वरुनमविदिगा॥

अम यथ राऊन॥

नेमथ जायमाला॥

वायथ गीता॥

ॐ नम यथमाला॥

वाक्क वाधिसत्त्वविक्का॥

ॐ नमनादि युध्वं॥

हांख क्षण यम

अंकुष गाजा

अम्यादि दक्षिण॥

यथमाला हांख

स्वज यथायनिनल ध्वज

नेमथादि यष्टिम॥

दीय क्षण यथायनि वज्र

यथायनि नल नकाल

वायथादि उरुन॥

ध्वजदह उत्थन

क्षण यथायनि नल

अह्वयकवा

वाक्क निष्ठाकलस॥

युध्वं अंकुष॥

दक्षिण याहा॥

यष्टिम दयता॥

उरुन यष्ट॥

यक्क नकास्त्रज॥

युनादि यमावलि

वजावलि जाल

युध्वं वज्र॥

दक्षिण यमदण्ड॥

यष्टिम नागा॥

उरुन कलसि॥

अम सुनायाग॥

नेमथ स्वज॥

वायथ ध्वज॥

ॐ नम नृज॥

कालाननाकृष्टं॥

ॐ नम शसत्तइर्गति

यनिष्ठाधनमलुन

लिखित्वा ० ॥

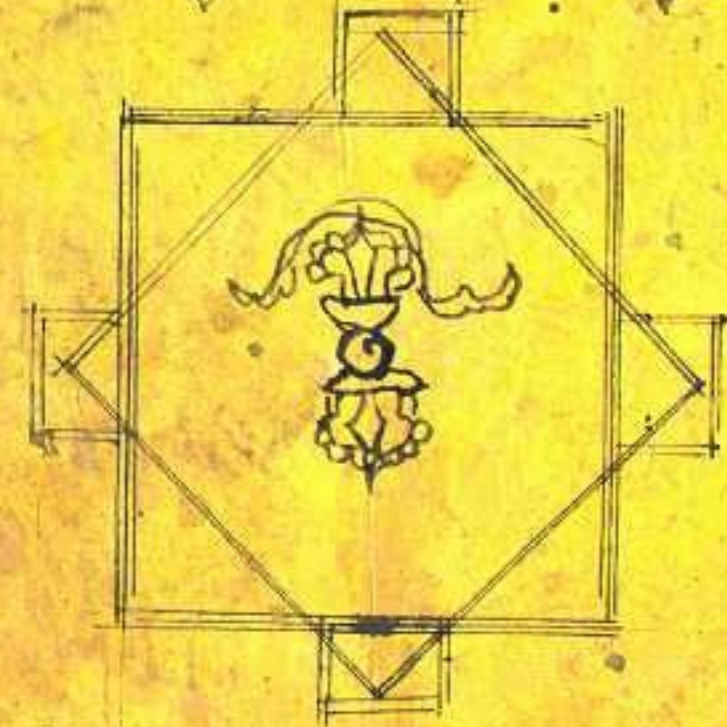
ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय ॥ वाजाकर्मविधिमाह ॥ आदौ सर्वं मगदिदिवलिथयनयाय ॥ ७ वाय ॥ गुनमधुल ॥ यंच
गर्वसाधन ॥ सिधुयक ॥ मधुलथक ॥ किरनक ॥ गिसमाधियाय ॥ कृष्णसर्वं मगविद्विलैयूजा ॥ यधर्मा अकालमूव
क्रियवदक्षणादवयूजा संनीतना धूय स्नात विधिथंयूजा यधर्माद्यादि ॥ वायनदिदिवलिविय ॥ थनमूवातामनिक
५ लस्वसदय स्वस्तिकसगय ॥ गुनमधुलदनक ॥ न्नायदवूगियूजायाक ॥ मधुलविसरून ॥ थननिष्यरुवना ॥ ॥ १
ॐ नमः शिष्यमातमानं रावय ॥ रावनस्वां दूतक ॥ यच्छगायविय ॥ वागाक्षवसर्वगथागगसुगदंनूयं सर्वधाधिसत्
नूयं मधुलाथेयनिवृत्तं मधुलाधियकिजानाक ॥ वायाद्यादिआवमन ॥ यंचयुहायूजा ॥ वाथनकिग्व स्वांजाठाडाहा
ऊलपाडाधान्य ॥ वाडं सर्वगथागगसुवलिगविलासिगमिगनमागिरावकजः हं वं हं ॥ यतिरुक्कसुमाअलिनाथक्षः

समयसत्वं ३॥ हल्य ॥ ॥ आचार्यन. वज. घञ्. थानाडा ॥ धूययाया ॥ वारुतावन अमकं यगिषायवः ॥ गत्तरकस्य रगवन्
यज्ञादकुरुमहसिः ॥ कथादि सर्ववृद्धाश्च कुरियत संयतिष्ठितः ॥ नायादवा ऊथा कृक्षा गदमि स्तुदि सा कगा अर्द्धस्वसगणं नाः
थरुत्वा यूथादिका ॥ मान् गतान् अमूकस्यार्थयवाधिसत्त्वप्रविधय. समन्वाहव रुमां वृद्धा ऊगावका क्रियार्थदाह दस्तुः
वाधिसत्त्वा ॥ जावान्या मरुदवगा ॥ दवगाला कपाला ॥ धरुगा संवाधिसासिगा. क्षासना रिनगा सत्ताथकविथा ऊवज्ञ
॥ अमूका हंमहावजिषा विधि संयुगाः ॥ कविषामि ऊगासुद्धं ॥ ऊथा ॥ छायवावगा ॥ अमूकया मूयादाय. संहिषास्यवग
मः सर्वस्याम्यगिषायसानिश्चकुरुमहर्थाः ३॥ ॥ वज्रतावा. मगरुंताया ॥ सूक्ष्मादिनायादिवया ॥ मूवायाक अर्द्धक ॥
सपत्नविकनं निष्कसविनक ॥ ॥ ययूयागविय ॥ दिगताया ॥ खरिवाक्यनयं घञ्. थस्यं ॥ मिद्ववगविय ॥ ॥ वा

[illegible]

सर्वन	कल	मट
अक्रिं	कसुज	यिना
सिफिं	नकसुज	गिसासु

दिदिव७



मट अविंकुमरुजाः ना सिफिं नकसुजा गिसासु ॥ वासुयार्धवागुमलु ॥ यं
 वरावाहनाधनरासिधनयामलु लथिका ॥ लंखवल्लिछाय ॥ सनाधिवाकृष्णसंगंमर
 सिफिं छायरलुकुमालिरुजामयास्यनय ॥ दवयूजा ॥ वाज्याधूनिगावामर
 नकसुजाविधिध्वंयूजा ॥ रुंकायविधिध्वंयूजा ॥ अधर्मादिकियूव ॥ नयग
 जायूजा ॥ अधर्मादिकियूव ॥ वाधनजकयानामलखस्यदकाय ॥ सखिकसकय ॥
 गुनमलुलदनक ॥ मरुयूजायाका ॥ सनाधवा ॥ विसर्जनयाका ॥ वाधनरावनास्त्रां
 नय ॥ गणधिषमात्मानंरावयत् ॥ वानिनांजन ॥ गार्थविकंमरुल्लय ॥ कृष्णसं
 ह्वनस्नानयाका ॥ ॥ उंछीवजवदवयदसवजयानिसमूर्तिगावसहितस्य ॥

माघसिद्धिजलसंगलंदिगकलंयनमार्थसिद्धिजलसंगलंरुवकुष्मान्तिकवकवायना वाधनकाद्रवसुविद्याडंआःदिवा
समेखादावाडंआःवाधनगदधकवचवसुखादावा वाधनडावगगसिद्धवसुधलकसिसाहवगस्यनका वाडंसर्वगथाग
तधुगमधूयानखादावा दूद्वंका वाडंसर्वगथागगविनामृगधनखादावा नासिक वाडंजीःखादावा वासिधिदिगत्वस्य।स्व
हृस्तिवायनयंघष्ठथास्यविथका वाडंजंखादावा अधिष्ठान वाडंसर्वसंक्षाधविद्दंरुट् नकानक वाडंआःगगसमाधिरुलसः ३
वैजिनयूयननखादावा ममसिआदिनकरावयाक वाडंसमाधिरुलदंखादावा नासिक वाडंजीःखादावा ३ वाहंत्वलंस्वनसाय
नखाद्विकनंमसद्वंका वाडंसर्वगथागगकायवि(क्षाधनवजुतिलकरुषनखादावा वा नामद्वय वाडंआःजम्
कवजोरुवगथागगनामरुर्वस्वः वाधनगधनगिदक वाडंआःतिवकरुषनखादावा चयरुवगिसानकियक वा जावाकावा

दिगन्तस्य स्वस्तिवाक्ये दयं च धृष्ट्या स्याद्विय ॥ उं सर्वो रत्नहारुषा (न) स्वादा ॥ का स्वायक ॥ ॥ धनदवख्जा आगं वा द्य
यक ॥ मूवाया हाननकं रुजा धापनायाय ॥ अविधानमरुः ॥ ॥ उं नमसमन्वृजाना सर्वमथोगानां डाजावलंदय
स्वादा ॥ धाव ॥ ॥ आगं द्यस्यं नक ॥ चलानिस्यं धनसाधवलनिस्यन्नक ॥ प्राणाय स्वादा ॥ चालां ॥ अयाधाय स्वादा ॥ अंगुली ॥
समानाय स्वादा ॥ दधुलां ॥ उं उदनाय स्वादा ॥ चालां ॥ उं वाताय स्वादा ॥ कालां ॥ उं दिवाय समाधिष्ठानजिनयूकन स्वादा
॥ हापचिननं काय जिहिकायानक ॥ नासिक ॥ उं जीः स्वादा ॥ कलशाय ॥ वयूक ॥ नासना विय ॥ संवलद्वं हायक ॥ उं
सर्वमथोगानकाय विहानधन स्वादा ॥ धननस्वासां मालानका स्वायक ॥ वरुधृष्ट्या स्यं स्वस्तिवाक्या स्यं स्वां नमालां का स्वायः
क ॥ उं वंजसूगन्धपूष्यमाल स्वादा ॥ सर्गा वियक ॥ सिंहलूय ॥ यधर्मा ॥ वजन अविष्ठानयाय वाक ॥ उं आः सूपमिस्ति वज

[illegible]

[illegible]

वसज्जुदडमलनय॥ज्जुदडमलसग्वश्यालत्रिस्सज्जुदडमकयतांविक्का॥स्वस्तिवाक्कयदयंदिगत्वसंस्वकलिविवा
 विय॥लाहमासमासकलक॥थननोयाकदाथयूजा॥नूसिधनक॥ज्जुवदामलनसमान॥क्कललंखनसमानकयाया
 थससंगय॥यश्चरायविय॥वज्जनवसयावथिसंअधिकां॥ ॥५॥अःसूयगिष्ठवज्जसदा॥ ॥ज्जानाविय॥ज्जं
 कांकात्वायक॥ ॥५॥अःधर्मादी॥ल्यदूहाद्विय॥५॥वज्जराखलं॥वानाकमान॥स्वस्तिवाक्कयदयंदिगत्वसंविक्का ५
 ॥हासिठुतांविक्का॥५॥वज्जनल्लगां॥ ॥५॥दसाकवज्जय॥गंकल्लय॥५॥सर्वतथागतावृक्षागयामि॥यदिगत्वसंवानां
 हानारुसयाय॥पिप्पलल्लसवस्ससंदगवानादय॥ ॥५॥यायाथसंगय॥वानाकमांल्यदूहाद्विलिकाय॥सिद्धं
 य॥ ॥कोमात्रियूजायाय॥मधुलथिल॥आहिवाद॥सर्वंमदनिकय॥दंशदकक्षा॥कोमात्रियूजाय॥ ॥समा

याचका ॥ ॥ धोसर्वं स्वसंगं विय ॥ गुणचका ॥ कलशय ॥ मूलसूत्र ॥ ॥ ॐ निमलवत्तनविधि ॥ ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ नमः नत्तुयाय ॥ ॥ ॐ प्रकियत्रि (ॐ धनमाधुलायूजाविधिमाह ॥ ॥ वाङ्मय ॥ विद्मधमेवकमूडा ॥ मधुल
 यादथसमसदडानकलसकय ॥ ॥ कलसर्वं मक वडरुडा जूस्ति स्वयकया दडानसिजसनाड लडादायन यंचन
 त्रकयाडा जूस्ति दाक्कायवमानदिन ॥ ॥ ॐ याय गुनमधुल यंचगव्य (ॐ धन ॥ सिधकय ॥ मधुलथिल ॥ स्वा
 गन्किगनविसङ्गना ॥ सिममाधि ॥ ॐ सखं मग थायिंयूजा ॥ दवयूजा ॥ ॐ या धूनि यूयं लाघष्टुगुति ॥ ॥ ॐ
 थमधुल यूजा ॥ रावनास्वागय ॥ ॥ गतामधुलमधु ॐ कम्मनियूर्ववजयादि ददि (ॐ वजास्ति यच्चिमसंयचक
 वरि ॥ ॐ वविजाष्टुय ॥ ॐ ग्मागजावागीने सखं विधंसक वायूयाश्चिकि विधी ॥ ॐ ॐ नां ॐ नां गय वरुदान

नवजांकुष्मादिका (ह) वृधूयादिदवगा एतसमयसत्त्वज्ञानसत्त्वावादनं ह्युक्तं कम्पदामरुनपूजाश्रवणम् ॥ १ ॥
आयाधुनि यूर्यलौघं मुक्तिवज्रगा वामगुरुत्वय ॥ विविधश्रंयूजा ॥ • ॥ यूर्यनास ॥ • ॥ उँ ह्रीं कम्पनयद्रुं स्वादा
उँ वज्रपाहायद्रुं स्वादा ॥ उँ वज्राक्षीयद्रुं स्वादा ॥ उँ ह्रीं वज्रवलि यद्रुं स्वादा ॥ उँ विज्रथाक्षीयद्रुं स्वादा ॥ उँ वज्रानानि
नद्रुं रुद्र ॥ उँ वज्रविश्वसिनद्रुं रुद्र ॥ उँ वज्रविकिनीनद्रुं रुद्र ॥ उँ ह्रीं नागयद्रुं रुद्र ॥ • ॥ उँ वज्रनाभ्यद्रुं ॥ उँ वज्र ॥ ३
मालगा ॥ उँ वज्रगीतज्ञी ॥ उँ वज्रनृत्यजः ॥ २ ॥ उँ मैत्रीयसूत्रधायस्वादा ॥ उँ ज्ञमाद्यदक्षीनस्वादा ॥ उँ
सर्वपायजद्रुं सर्वापायवि (ह) धनस्वादा ॥ उँ सर्व (ह) कटमादिघातमगद्रुं ॥ उँ गान्धदस्मिन्नद्रुं ॥ उँ सूर्यगम
द्रुं ॥ उँ गगहागंजद्रुं ॥ उँ ह्यानकगुद्रुं ॥ ३ ॥ उँ ज्ञमृगयद्रुं ॥ उँ वज्रयद्रुं ॥ उँ रुद्रयानद्रुं ॥ उँ ह्रीं नदीय

रुद्रं ॥ ४ ॥ उँ वज्र गरुडं ॥ उँ अक्षय मणि रुद्रं ॥ उँ युगि शानकरुद्रं ॥ से उँ मकर रुद्रं ॥ ५ ॥ उँ वज्र युध रुद्रं ॥ उँ व
ज्र धूय रुद्रं ॥ उँ वज्र वलाकि रुद्रं ॥ गन्धर्व रुद्रं ॥ ६ ॥ ॥ अथ धर्मादि ॥ ॥ अथ मधुल वृक्षा ॥ ७ ॥ अथ अरुणा
वन ॥ ॥ अथ कायलका शायमा गाय अक्षय दारुणा कासां गादनयाय ॥ मरु ॥ उँ वज्र मूनय रुद्रं ॥ ८ ॥ ॥ अथ १०
६ ॥ ॥ अथ दिवंगारु रुद्रं ॥ मरु रुद्रं ॥ उँ सर्वयाय रुद्रं ॥ उँ सर्वयाय रुद्रं ॥ उँ सर्वयाय रुद्रं ॥ उँ सर्वयाय रुद्रं ॥ उँ सर्वयाय रुद्रं ॥
६ ॥ ॥ उँ ॥ सर्वक मोवन रुद्रं ॥ उँ ॥ विष्णु रुद्रं ॥ उँ ॥ विष्णु रुद्रं ॥ उँ ॥ विष्णु रुद्रं ॥ उँ ॥ विष्णु रुद्रं ॥ उँ ॥ विष्णु रुद्रं ॥
६ ॥ ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥
६ ॥ ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥ उँ ॥ उवन रुद्रं ॥

हंरुद्रा उंष्टि २४ सर्वो व नक्षानि हंरुद्र ॥ उं दं २४ सर्वे न व क ग कि हंरुद्र ॥ उं यं २४ सर्वे य ग ग कि हंरुद्र
द्रा उं मथ २४ सर्वे कि यो ग कि हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे या य वि (क्षा धनि ह्ना ला व ला कि नि हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे या य ग कि वं
ना स नी हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे या य वि (क्षा धनि धन २ धू य य २ हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे दू र्ग कि वि (क्षा धनि य य वि ला कि नी थ हंरुद्र ॥
उं ४ सर्वे या य वि (क्षा धनि ह्ना ना व ला कि नि हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे या य ग कि वं ध ना स नि य हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे न व का य ग ला ॥
क षे हि हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे या य ग कि ग द न वि क्षा स नि हंरुद्र ॥ ॥ ७ ॥ कृ ण लं छ क य ॥ ॥ उं न मा
४ उं ४ सर्वे न व का दू द्वा व हि हंरुद्र ॥ उं ४ सर्वे या य वं ध ना ह न वि (क्षा धनि हंरुद्र ॥ ॥ रा व र्थे सर्वे दू र्ग कि य वि (क्षा धन ना
जा य ग थ ग ना या हे क सं म्य क्त्वं द्वा य ग थ ॥ उं (क्षा धन २ वि (क्षा धन २ सर्वे या य वि षु द्ध शु द्ध वि षु द्ध सर्वे क म्म वि षु

[illegible]

वनसुवर्णवर्णधर्मवर्णमूलाः ददीयमानं यन्मन्त्रवर्णान्कृष्णादिनां ह्यनसत्त्वमावाहनं विहायः ॥ राधूपानिला
 ऊनवर्णानां मन्त्रवर्णानां यत्संगलसकनसत्त्वहर्णगस्यवृद्धवृद्धस्यदायवर्णस्यविवृद्धवृद्धस्यदायवर्णस्य
 गन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्य
 ७ स्यलाकण्ययनिदिगस्यनिनात्मकगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्यगन्धवर्णस्य
 वनस्यनित्यं सत्त्वयकान्वितस्यसत्त्वयकान्वितस्यसत्त्वयकान्वितस्यसत्त्वयकान्वितस्यसत्त्वयकान्वितस्यसत्त्वयकान्वितस्यसत्त्वयकान्वितस्य
 ८ नश्मन्मन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥
 दा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥ उहंमन्त्रयस्वादा ॥

स्वादा॥ उ० द० ग० श्री० य० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० वि० कि० नि० न० द० स्वादा॥ उ० ह्री० गा० य० ग० द० स्वादा॥ उ० ला० ध्या० य० द० स्वादा॥ उ० मा० ला० य०
स्वादा॥ उ० गी० गा० य० द० स्वादा॥ उ० न० त्या० य० अ० स्वादा॥ उ० मे० गी० स्त० ल० ना० य० स्वादा॥ उ० अ० मा० घ० द० णि० (६) द० स्वादा॥ उ० सर्व० या०
य० ज० ह० सर्व० या० य० वि० ह्म० ध० नी० स्वादा॥ उ० स० व्वे० ह्म० क० क० मा० नि० घा० क० म० क० द० स्वादा॥ उ० ग० न्द० ह० कि० न० द० स्वादा॥ उ० स० न० ग० म० द०
स्वादा॥ उ० गी० ग० ण० ग० उ० द० स्वादा॥ उ० स्त० न० क० उ० द० स्वादा॥ उ० अ० मृ० क० य० रा० य० द० स्वादा॥ उ० वे० न्द० व० द० पु० रा० य० द० स्वादा॥ उ०
रु० द० या० न० य० द० स्वादा॥ उ० ह्री० ली० न० य० य० य० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० ग० रा० य० द० स्वादा॥ उ० अ० द० य० म० नि० द० स्वादा॥ उ० य० गि० रा० न०
कू० ट० द० स्वादा॥ उ० स० म० क० र० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० यो० ध्या० य० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० क० ण० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० या० ण० द० स्वादा॥ उ० वे०
ज० ह्म० ट० व० द० स्वादा॥ उ० वे० ज० व० ण० द० स्वादा॥ ॥ य० लो० ध्या० तु० गि० ॥ ॥ उ० वि० धृ० ग० सर्व० स० क० ल्य० रा० वा० रा० व० वि० व० कि० न० ध्या० क० सि० द० न० म०

स्वामिहृदयकृतिनिर्मलं॥ येनो ॥ १०६ ॥ अमनयद्रुद्र॥ ध्यान १०६ ॥ अथ धर्मोक्तानाम् कियत्तु ॥ ॥
बलिवियः विविधं यज्ञा ॥ ॥ मधुधिल स्वांगन ॥ मुक्ति ॥ १०७ ॥ नमस्तुः ॥ ॥ अमिंदाय धर्मवक्तव्यरुद्रकः ॥
कुंकुमात्सर्वे ॥ ॥ धय सर्वेदुर्गमि ॥ १ ॥ नमस्तु वज्राश्री वाय धर्मवक्तव्यरुद्रकः ॥ सर्वसत्त्वदिनाथाय आत्मक
त्वयदहाकः ॥ २ ॥ नमस्तु वज्राश्री वाय समककस्वरावनेः ॥ ॥ धय रुद्रकः ॥ सर्वसत्त्वदिनाथाय कः ॥ ३ ॥ नमस्तु य
श्री वाय स्वरावयरावटः ॥ ॥ अहमयनि सत्त्वधर्मो मृगयवर्षे ॥ ४ ॥ नमस्तु विह्वश्री वाय स्वरावयक
तमनूस्ति ॥ ॥ विह्वकमेकवोक्त्वां सत्त्वानां दूः ॥ ॥ स्वहमकय ॥ ५ ॥ नमस्तु वज्राश्री वाय ॥ ॥ धय रुद्रकः ॥ सत्त्व
सत्त्वदवायसूतदृत्वाकलिशक्ति ॥ ६ ॥ नमस्तु वज्राश्री वाय विनामहिध्वजध्वनं ॥ ॥ दाननसर्वसत्त्वानां सर्वोसा

यत्रियूत्रयः ॥ १ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ २ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥
६ ॥ नमस्तु हस्त्याय अयस्तु हस्त्याय नमः ॥ ७ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ ८ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥
९ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ १० ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ ११ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥
१२ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ १३ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ १४ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥
१५ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ १६ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ १७ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥
१८ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ १९ ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥ २० ॥ वक्रमालावतं रत्नं सत्त्वानां वाधिप्रायः ॥

मधुलविस्मृतन॥सर्वगतय॥चक्रयूजा॥दक्षिणा॥किरु॥निसना॥दगु॥समय॥क॥क्षणा॥कव॥ ॥
 ॥ति॥मृष्टि॥यक्षा॥नक्ष॥विधि॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥संक्षय॥प्रतिष्ठा॥विधि॥माह॥गु॥न॥मधु॥ल॥यं॥व
 गवा॥सिध॥रु॥य॥समा॥धि॥सर्व॥म॥क॥था॥पि॥न॥स॥रु॥वा॥ना॥॥धू॥य॥नि॥नां॥ज॥न॥॥वि॥धि॥ध्वं॥यू॥जा॥॥द॥व॥यू॥जा॥॥
 शा॥व॥ना॥खां॥॥ ॥आ॥या॥धू॥नि॥यू॥यं॥ला॥घं॥कु॥ति॥ग॥त्य॥न॥॥ ॥ऊ॥न॥क॥र्म॥द॥व॥गा॥न॥स्व॥स्यं॥ ॥७॥
 ह्य॥॥आ॥वा॥र्य॥स॥मं॥ग॥य॥॥ ॥न॥द॥नू॥नि॥व्य॥न॥द॥व॥गा॥मृ॥ग॥रु॥य॥॥य॥ति॥ष्ठा॥या॥य॥॥द॥व॥द्व॥व॥नः॥
 आ॥वा॥र्य॥वा॥हा॥व॥॥शा॥व॥ना॥॥ग॥गा॥॥क्ष॥सर्व॥ग॥था॥ग॥न॥स॥हं॥स॥नू॥यं॥सर्व॥वा॥धि॥स॥त्न॥नू॥यं॥म॥धु॥ला॥य॥य
 नि॥वृ॥गं॥म॥धु॥ला॥धि॥य॥ति॥मा॥ला॥कः॥॥वा॥या॥घो॥दि॥॥यं॥वा॥य॥वा॥यू॥जा॥॥खा॥न॥क॥ना॥डा॥ऊ॥आ॥मा॥नं॥दा॥

ऊनयं वाने ॥ उं सर्वगं गगनसुखलितविलासतमिगनमाप्तिरुगवत्कजः द्वंद्वं क्षाः ॥ यतिश्चक्रसः
मां कुलिं नाथ क्षाः समयस्त्रं ॥ धूमि यदयावत्स्नानया क्षलक्षान् ॥ ऊऊमान ऊऊ यन्निचूया, त्वउय
निथकाया स्वां हायोजे न य ॥ आचार्यं ध्वं धूययाय, वाक् ॥ ॥ उं रंगवनजमूकसः
वैविद्यानां ऊं नभास्तु गं ककुमिच्छामि गनाथं प्रमिष्ठा कनूष्मात्मकं, सिथानां मनूकं याय, यूया कं यः
मिष्ठा यत्रः गं नराकस्य, रंगवनप्रक्षदकुरु, मदसिः ऊथादि सर्ववृद्धाश्च, रुयिगसंयतिष्ठिना
ः आमादया ऊथा कक्षोगदलिस्ते दिदाक्षुगोः ॥ जूगस्वहा गं नाथं रूत्वा यूयादिकाः सांगृहान
नूकस्याथ य, वाधिसत्त्वपवृद्धय, समन्वाहननुमां वृद्धा ऊगवक क्रियार्थदा, रूदरू वाधिसत्त्वा

ॐ
५

अ. यावान्यामरुदवताः ॥ दवतालाकयालाश्चरुतासंवाधिमासिना. क्षमनाशिवतासत्वा. यकविह
ऊचक्षुषः. अमृकाः इदंमहावज्रियुगिषाविधिर्मयूताः. कविष्यामिऊगत्सूक्ष्म. यथाक्षकयुवावगः
अमृकयामूयादायसहिष्यस्यवगत्सः. सर्वस्याम्युगिषाया. सानिधंकरुमदर्थः ॥ ३ ॥ ह्वयववान
॥ ॥ अथमसरुवंऊमं. सरुलंजिविगं वमसमयंसर्वदवानांरुविगादंनसंसयः ॥ अथे ॥
वरुणविष्यामि. धाधिविरु कवरुसः ॥ गथागगः कुलायनिमसायस्यानसंसयः ॥ अथममदि
वसादयय. क्षमदयनरुनंः सन्नियारुवक्षय. सर्ववृद्धनिमकुनाथः ॥ गददीजनक्षमकीक्षक
प्रश्नानदवतामाकृष्यः ॥ याथादि ॥ निर्वाजन ॥ ॐ विम्वयवक्षय ॥ दवविम्वनपिहाउ

डाङ्गुहावया ॥ सिध. गव. ॥ ॐ नमो ॥ दायक ॥ ॥ थन स्वां क्लृप्तं ह्ययं चाम्, पञ्चगव्यं स्यंद
वयाक सनान ॥ ॥ ॐ संगं सकलसत्त्व, दिगन्तस्य वृद्धस्य दाह्यस्य दिव्यवृद्धेः ॥ यः
गमंगवृद्धिदस्य विहाता कस्य, तस्मिन् गलं रुवं शुभं यत्र माशिष्यक ॥ ॥ थन स्वां काया उनात्रिः
द्वदनयाय ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ॥ दनं स्ना ॥ ॐ तस्मिन् गलं सुवनना सुवपूतस्य, धर्मस्य क. न कथितस्य, नि
वृद्धेन स्यात्, लाकरयं युनिविगस्य निवार्मकस्य तस्मिन् गलं रुवं शुभं, यत्र माशिष्यकः ॥ ॥ ॐ तथा हि जातमात्र
नत्यादि ॥ ॥ ॐ यूवस्तु विय ॥ ॐ ॐ ॐ वाध्यागदधक वचवस्तु स्वाहा ॥ ॐ वां दयक ॥ ॥ थन स्वा
ना. लिव. रुग. आदिन. कुरुं वयाय नार्थदका. किदाव. उादाव. दायक. रुष्टिसमस्तं दादावय ॥ ॥

ॐ
दि

ॐ आः दिवा वासस्य स्वाहा ॥ ॐ आः गिल कुरु वन स्वाहा ॥ (गमन वनं गिक ॥ आया धूं नि. यू. यं लाघं
दुति ॥ ॥ ॐ वे जां कृष्णः ॐ ॥ ॐ वे ऊ या हा जी ॥ ॐ वे ऊ स्मृ ट वे ॥ ॐ वे जां हा हाः ॥ मूज कास्यं वल्ल
थास्यं हात दान ॥ ॥ धन वजं धिस्यं विज न्यास ॥ ॐ व सु या न ॥ आ कथू स ॥ हूं नू गत्र ॥ क्षो मि त्वा २
ॐ कृ स यं २ ॥ ह्वं. क्रो स ॥ गं कुरु ॥ स्कं. कया न ॥ सैं. खरू ॥ धमि वी जा दल न अ धि स्थान ॥ ॥ धन. १२
वि न का नि ह सु पू. अं कल मला काय ल डाला य ॥ ॐ हा य मि त्वा ना स. भा स सैं नि स. धल क स्मि न द्वा या
ॐ ॥ म का न. ट का न. अ द न न जा ग रु व. सूर्य व द्रु त्वं. ॐ ॐ हा त्व ॐ मि त्वा स अं कल न ड न ॥ वि न का लि न
मि त्वा कैं क ॥ स ना का का या ॐ द व या कैं ड न ॥ ॥ अ हान अंध का ल व द्रु यं. प मि त्वा जि नं रु वः ॥

कावेयनाजंयथालाकस्यतोमिवं॥ मरु ॥ ७८० ॥ वक्षुश्चमरुचक्षुविष्णुधनखाहा॥ अजुवंडव॥
उदियवक्षुध्वं॥ मिष्टानिध्वंडव॥ ॥ ७८१ ॥ धर्मवक्षुध्वं॥ ७८२ ॥ हानवक्षुध्वं॥ ७८३ ॥ कसकं
कन ॥ ७८४ ॥ वक्षुध्वं॥ ७८५ ॥ वक्षुध्वं॥ ७८६ ॥ वक्षुध्वं॥ ७८७ ॥ वक्षुध्वं॥ ७८८ ॥ वक्षुध्वं॥ ७८९ ॥ वक्षुध्वं॥
कवृश्चं॥ ७९० ॥ वक्षुध्वं॥ ७९१ ॥ वक्षुध्वं॥ ७९२ ॥ वक्षुध्वं॥ ७९३ ॥ वक्षुध्वं॥ ७९४ ॥ वक्षुध्वं॥ ७९५ ॥ वक्षुध्वं॥
कयकवामयः॥ विंवसावायथास्तुध्वं॥ ७९६ ॥ वक्षुध्वं॥ ७९७ ॥ वक्षुध्वं॥ ७९८ ॥ वक्षुध्वं॥ ७९९ ॥ वक्षुध्वं॥
वदि॥ ८०० ॥ वक्षुध्वं॥ ८०१ ॥ वक्षुध्वं॥ ८०२ ॥ वक्षुध्वं॥ ८०३ ॥ वक्षुध्वं॥ ८०४ ॥ वक्षुध्वं॥ ८०५ ॥ वक्षुध्वं॥
वाचनपर्यंतं॥ वि॥ पा॥ वा॥ क॥ दाय॥ ॥ ८०६ ॥ वक्षुध्वं॥ ८०७ ॥ वक्षुध्वं॥ ८०८ ॥ वक्षुध्वं॥ ८०९ ॥ वक्षुध्वं॥
॥ ८१० ॥ वक्षुध्वं॥ ८११ ॥ वक्षुध्वं॥ ८१२ ॥ वक्षुध्वं॥ ८१३ ॥ वक्षुध्वं॥ ८१४ ॥ वक्षुध्वं॥ ८१५ ॥ वक्षुध्वं॥

विनिधाय घृणमधूनायासयत् ॥ ५ ॥ वाक् ॥ ॐ ॥ सर्वगथागतः मधूयासनस्वादा ॥ धनक
 स्मिनक ॥ ॐ ॥ सर्वगथागतविनामधूनास्वादा ॥ दूदत्वंक ॥ यं लां घं रुति ॥ वजां कृष्णादिमूदा
 ॥ हाताक्षर ॥ ॥ ॐ ॥ निजातकर्मविधि ॥ ॥ धनजाचार्यशवना ॥ सहद्वीजादोदवगाः
 नामाकनं विरायः ॥ यदीथाई विरक्तं वगदस्मिनासर्वोकाक्षधारुपत्रिपूर्व विरायः ॥ यूननागः १३
 लः सहदया नामाक्षरं मनुविश्वार्यदवगाहदय ॥ यवक्षयत् ॥ गथे वरुलनादिकं कृत्वा ॥
 ॥ धनजाचार्यथडाहदयमनुडादवयानामावेक्षेणार्थ ॥ मगयाकिनडा ॥ ॐ ॥ काक्षं ॥ ॐ ॥
 डाहदयनयादा ॥ ॐ ॥ डादवयाकद्विगणाय ॥ ॥ ॐ ॥ पा. धूं. नि ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ धर्म

[illegible]

कर्तुविधि॥ ॥ धनरावना ॥ ॐ आकाशधरुर्वगर्ग्यवं यथागतददताथेगच्छवृद्धनरु
 तकथयनिसवेत्यक्रमस्वद्वसदानुकम्पका॥ यूनारित्य (ह) षविकल्मषश्चनश्चक्रि. विः
 धरुवविघ्नहर्करुलकिरासयसनावथार्थमश्वकजसाकनकीवसावम॥ ॥ धनवृम्व
 आसाम्वन. क्रसयंसास्वना ॥ मरु ॥ ॐ कर्तुविवलायनायकि. स्फुटयश्चंखादा॥ ॥ धन १४
 ऊकाक्रिया॥ स्नानयाय ॥ श्रीवज्रवदवत्रयदसवजयानिसमूर्तिगाश्चसदिगस्यः जमासिद्धि
 ऊसंगलंदिताकनं. यवमार्थसिद्धि. तसंगवर्गवन्तु. क्षात्रिकवर्गवायः॥ ॥ अउं वसुवि
 य॥ ॥ ॐ दिवावासस्यखादा ॥ ॐ वाष्पं गृहकवववसुखादा॥ ॥ वज्रगावा. मठ रुंलः

अ
 क

या॥ नानासिंहाहल पंचयक ॥ नमस्तुतु याथ वसगस्यं दिगगाद्यय लखं दाय ॥ ॐ आ॥ श्रीः स्वाहा ॥
भासिक ॥ पूषादियूजायुति ॥ ॥ ॐ गिरुलयासनविधि ॥ एवम ॥ स्नानयाकयूजायुति ॥
॥ स्वतिवाक्ययवय पतिवन दिगगास्यं वियक ॥ स्नादाग्निवद्धा ॥ नानाश्रुनविय ऊनाक
यविय ॥ ॥ ॐ सर्वेश्वरनक्षत्रमनस्वाहा ॥ गिस्तांतिक ॥ सिहं नूय ॥ जनकखुजाकुल ॥ वज्रिगः
स्यं नानाव्यं जनन याडाहाहावय ॥ ॥ ॐ नमः समकवृद्धानां सर्वगथागतानां ॥ डाऊववंद
यस्वाहा ॥ ॐ नमस्वाहा ॥ ॐ आः हं ॥ धनग अघिष्ठान ॥ ॥ आगं दयक ॥ ॥ ॐ यानायस्वाहा
॥ अयानायस्वाहा ॥ ॐ यानायस्वाहा ॥ ॐ अयानायस्वाहा ॥ ॐ दिवानायस्वाहा ॥ ॐ दिवानसमाधिः

ध्यानविननस्वादा ॥ हायविननंकायानक ॥ उंजीः स्वादा ॥ वाकनवधाय ॥ नस्वाकसान
मानंकास्वाक ॥ मुखसिद्धि ॥ ग्वय. ग्वानविय ॥ वाकथस्वाय ॥ अउवंविय. चनामधिमादि
गयाडावा ॥ दायक ॥ ॥ पूषादियूजा ॥ यं. ला. घं. पुति. ॥ ॥ ॥ निजूनयासनविधि ॥

७
६

॥ ॥ धनरावना ॥ उंमहासूखवऊऊः हूं वः साः सूत्रगलंमसयिनि ॥ सर्वगथगतलकि ॥ १५
हनहासहननकावयग ॥ ऊऊमानंहाऊनयंगयक ॥ उंमहासूखमहावागसिवंसर्वऊगय
तिसर्वसत्वमनायायिसर्वसत्वददिसिग. सर्वसत्वयिगाथेव. कामागधः समयाजिनांसत्वानां. न
नमनाथं. कामास्तुपनिपूवयग ॥ धर्मधारुवधिथानासमयसननायविद्वययासर्वसत्वानां. कः

[illegible]

आदि

दक्षिण सुवर्णयासुषुमायागु मृदादलयप्रायनी चन्द्रसूर्यविक्रानावांगु उग्रशुभमसलानशालयाडा गुन ४

सकसांवाधिहानयागुवजंअधिमानयानागयागुअलंनंरुडाधनाधानगुआकाक्षाथेनथाहाम
दयावागुवजथंरुत्कंरुक्कसजियावांगुसंसात्रयागुदुःखगत्ररुथकनिर्मिनिनथथिंगुअरिथः
कजियनिसुविशविश्वारुनधकगुन्याकपार्थनाया॥ ॥रावना॥ ॥तमानजसाविश्विगाव
दलकमवागुविचयसूर्यउपविष्मषसत्यलीकंवजनेनूपांविशावाभा ॥आयानिआहानिनका

[illegible]

[illegible]

[illegible]

या उवा

~~मृथिगु वजं मृथिगु नयानमया गुमहा सुखलाय गुहानयानम गुमृथिगु ललित वजं मृथिगु कलायूता २~~
~~दीजन वजं मृथिगु नयानमहा सुखलाय गुहानयानम गुमृथिगु ललित वजं मृथिगु कलायूता २~~
~~यन्न वजं गुलिललित नयानमहा सुखलाय गुहानयानम गुमृथिगु ललित वजं मृथिगु कलायूता २~~
~~थागगाधियत्वन दृष्टारव ॥ स्वकन ॥ मृथिगु कलायूता २~~
~~गुक्कालय संश्रवं ॥ १॥ दृष्टीय ॥ मृथिगु कलायूता २~~
~~ताय निसकस्य नं नमस्काया दारया गु. समस्त वजं यनिसं गुलित गुक्कालय संश्रवं ॥ १॥ दृष्टीय ॥ मृथिगु कलायूता २~~
~~मृथिगु कलायूता २~~
~~॥ मृथिगु कलायूता २~~
~~पं. ला. घं. मुनि. त. र्वन ॥ १॥ दृष्टीय ॥ मृथिगु कलायूता २~~

७१
७२

१६

३

५

वत्त संरुवया बांगु श्या बांगु अथिगु सुवर्षया वृय श्या बांगु सुफ वत्त संयुक्त शृगु गत्ता वहां (६) लाय
कंदहिमक वृक्षा काक वज्र सत्व गुणा धेय ॥ ४ ॥ राहनाथ x छलया लज्जिका वृक्षा वक्त. स्वगु विभुवन
यका हा श्या बांगु. वज्र सत्व गथा गगया कृश्या बांगु. मकूटा रिषक जियानि सु. वि स विष्ठा यमाल ॥
॥ रावना ॥ आंका वज्र. वत्त संरुव वृयि नं. हान सत्व न की कृगं. नर सु गथा गगय वीरिः कूं रे न रि
विष्मा वृय वजा दिरि वृय मानी यमान मंगल गी किकं रावथ ॥ ॥ गगः कलक वक्त दिद्य टिगं
वत्त संरुव मकूटं गत्त राव वज्र हान सत्व वृयं यक्ष गथा गग मध्य विग डिश कूल (६) न धि विमं गस
हिल मध्य. लला ग समा गाय ॥ हिल सयूक्त ॥ यू. द. य. उ. दि ४ स्वक ॥ वाच ॥ ५ वं वज्र धा गव्यः
विषि च्छं ॥ ५ वं सत्व वजी अरि विष्म जी ॥ ५ वं वज्र विजि अरि विष्म जी ॥ ५ वं वज्र विजि अरि विष्म जी ॥ ५ वं
मान श्या बांगु यं व वृयि स्य न मान याना गः गु. अथिगु मकूट जि हिल यला गका धक रा ल या डा गु वृ.

मकुटादीषक इत्युपस्थितं दक्षकथा नया वृजमक्षि रूपा विष्णुना वांशु अथिगु मकुटादिषकलागता २
मवजिअरिषिअः ॥ ॐ दक्ष सर्ववृद्धानां शुद्धादुक्तं नमस्कृतं यथा कं पूजनाथं यमकुटयं च कुना
हवः ॥ ॐ सर्ववृद्ध वृजमक्षि मक्षामकुटयगिच्छताः ॥ ॐ अरिषकल्यादि ॥ ॐ अः वज्रमकुटादिषिच
हंसनगस्यमहं ॥ ॥ धनियदयं ययक ॥ सि ॥ यश्च ह्यानवरावाद्याददिभवजयगं मम अविद्या
यननिरोधह्यानवाफारवाम्यहं ॥ य ॥ हनाथ X धनाहानं उत्पतिरुयात्रा कुवज्रयावक १०
जियनिअह्यानरुगक. तडाधनह्यानलायनिमिलिन. वज्रया अरिषक जिमिताविशविष्णायमा
ल ॥ ३ ॥ रावना ॥ ॥ मतिगिजाः यनयविषातं अमिगारवूयं ह्यानसत्वारिन्नक्षिष्यं वज्रं वा
मिताहात्मकं विविंश्य ॥ ॥ अरिषकं नित्यादि ॥ अद्यादिषिकस्त्वमसि वृद्धं वज्रादिषकतः ॐ
अथिगु यथायनिअथमस्थाना अमिगारया वूयइया अ वज्रया अरिषकलागता सुवा अ गुव्याम

३
७

१०

x ललानाडावजगिनाडा मसहर्वमानरुयाडा वजघष्ठजालिकुणमजकयाडा गुन्यामपार्थनाया धकं ३॥
दकसर्ववृद्धत्वं गृहवजससिद्धय ॥ ॥ धर्मिवाक्यासं कथू कया नृगा थिपक लडाक्य ॥
॥ अरिषकल्यादि ॥ उं वजाधियतित्वा यमरिषिभूमि गिष्ठवजसमयस्तं समयदाः ॥ उं वजघष्ठ
मूः मूः ॥ ४ ॥ ॥ १२ प्रह्लायावमिगा नूयं घष्ठ (हो वंददस्व मथनया फन सर्वगथा मधः स्यामदहृगं ॥
॥ ष ॥ हनाथ ॥ प्रह्लायावमिगा स्व नूय रुयाडा चांगु घष्ठ या अरिषक डि मित वि स वि का य माल ॥ दू
या निर्मलिन धाल सा था म्भ २ गित सत्व पा हिय नि दिता या य नि मि लिन घष्ठ या अरिषक डि य नि
सु वि स वि र्या य माल ॥ ॥ रावना ॥ ॥ ह्वं ह्वं ज्ञा मा घ सिद्धि नूयं ह्वान सत्वारि नं घष्ठं च मा च सि
य नि हा ता वि रा व यत् ॥ ॥ गृहिणा इति मया रुगव न्मयि स नि दिता रुवः ॥ ॥ धर्मि य द य
अथिं म्भ मा घ सिद्धि या नूय रुयाडा म्भ धन ह्वान अन गु अथिं गु घष्ठ या अरिषक लान रुल या डा गु

पंचसंगधननिकवाक उं ह्रीं श्रीं गुरुभ्यो नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ३३३

वष्टनकथं कथा नूग थियकं ह्वजनादातिंधाक ॥ रावना वाडं चकं वेवाचननूयं ह्वानसलेकवसं वि
रायः ॥ ॥ अरिधकलादि ॥ ॥ वज्र घटकासं हिल कश्च नूग थियकं आलिंगधमूद्राकायकं व

जलाय ॥ ॥ घट्टासमयविय ॥ ५ ॥ मरुसंययदं ह्वनदहिमसिद्धिदायकं ॥ ६ ॥ हनाथ

५ ॥ अरिधकलाय धून मरु मलानानि मरु अरिधक मला कडा धना वांगु ह्वानसिद्धिलाययानिसिद्धिन २०

जिमिक विसद्विष्ठा यमालधक गुन्याकयाधनायाना ॥ ॥ धनगुनं जययानाडा ॥ वाक्याय

॥ ॥ दलासिमयारुवावन्निनिदिगारुवः ॥ ॥ हियंधायक ॥ गृहीणासी मयारुवावन्मयिसुः

निदिगारुवः ॥ ॥ जयमालावलाय मरुविय ॥ ॥ ॥ जययायधुंकाडा हलारिधकविय ॥ वज्र हिल सथिय ॥

२ ॥ नानाविजगुन्यादि सत्ययादं वकावयन् मरुणाग यवादानं यच्छयायाग सहि मं ॥ गुन्याकयाय

वाक्यजयाक ॥ मरुलथीक ॥ कितन ॥ आशीर्वाद ॥ मरुलविसर्जन ॥ सर्वं मारुनिश्चय ॥ सिद्धं रिय ॥ दिगुसक्तय ॥ पंचधाल ॥

[illegible]

२ वाकलपूजा

निलाञ्जनलासाग्निकान्ता॥ स्नानधमलुल॥ सिध॥ ऊँ॥ स्वां॥ देवय॥ समयधाममट॥ यथान्यास॥ गायत्रय॥ सिरुं॥
य॥ पंलांघं॥ रुमि॥ ६॥ गायकल॥ रत्नभावावस्थय॥ शवना॥ लासाग्निकान्ता॥ सग्वं॥ विय॥ सिरुं॥ नूय॥ गायकनकंद॥
काय॥ यानं॥ पा॥ स्वस्ति॥ सशान॥ गुन॥ लुल॥ दनक॥ मट॥ पूजा॥ य॥ क॥ गाय॥ विय॥ सं॥ खल॥ न॥ स्नान॥ वाक॥ १॥ १॥ स्व॥ द॥ य॥ सु॥ ४॥
वीजा॥ क॥ वं॥ माना॥ ला॥ क॥ धा॥ रु॥ सु॥ लि॥ त्वा॥ अ॥ क॥ नि॥ रुं॥ व॥ नं॥ ग॥ ला॥ ग॥ सा॥ दा॥ क॥ य॥ धी॥ लं॥ लि॥ नं॥ वि॥ क॥ थ॥ न॥ या॥ या॥ दि॥ निलाञ्जनः २॥
कल॥ स॥ व॥ ख॥ ल॥ स॥ नान॥ ऊ॥ ल॥ न॥ लं॥ स॥ क॥ ल॥ स॥ ख॥ व॥ ऊ॥ य॥ न॥ मान॥ न॥ म॥ य॥ गं॥ धा॥ व॥ सं॥ यू॥ क॥ सं॥ ख॥ सं॥ ६॥ धि॥ रं॥ पं॥ व॥ यि॥ यू॥ खं॥ दं॥ का॥ न॥
म॥ न॥ स॥ च्चा॥ यं॥ सं॥ वृ॥ द॥ व॥ ऊ॥ सं॥ क॥ पि॥ न॥ वि॥ या॥ क॥ ल॥ ६॥ ॥ घ॥ ट॥ वि॥ रा॥ क॥ ग॥ फ॥ नू॥ य॥ ख॥ रा॥ वं॥ अ॥ लं॥ क॥ न॥ म॥ अ॥ कि॥ नी॥ ऊ॥ ल॥ नू॥ यं॥ स॥
टि॥ गि॥ सा॥ ध॥ न॥ द॥ व॥ ना॥ च॥ कं॥ स्नान॥ स॥ ख॥ मा॥ नी॥ य॥ ह॥ दि॥ ऊ॥ कि॥ न॥ वं॥ वि॥ रा॥ य॥ ४॥ ॥ सं॥ वा॥ थ॥ य॥ क॥ वा॥ क॥ ॥ ७॥ अ॥ ४॥ स॥

५
५

२१

वैडह्यकषासुषुषुसर्वापायविष्णुधनंस्वादा॥ श्रीकनंगिलक॥ उँआःवज्जनेललयनाय स्वादा॥ थकलिक
केवाकं॥ उँआःमकूटकषाधाव(क्ष) स्वादा॥ उँआःडह्यकवन्ध(क्ष)लानाकर्ष(क्ष)स्वादा॥ दाम्बसयलयाक॥ रकु
नकुकांसिद्रयैक॥ उँआःशुङ्गकषाद्वदनस्वादा॥ वृसिद्रगयरागसं॥ उँडयागाल्यादि॥ डंलंकन॥ डंलून्यः
गाकनूष्णरिनंवाधिविरुस्वयंदर्यनदृष्टास्वादा॥ थनकमालिस्वकांशु॥ दिक॥ रुकुनकुवृसायाककेवास
कलंसयसैवस्वकथा॥ स्वरिकैवो॥ थाकालिमंशुथिल॥ स्वांवाय॥ सुनि॥ क्षागाद्वन॥ दमायन॥ आगिवां॥ स्वर्गः
वियवस्वलाय॥ वक्रमधिनंशगयाव॥ नमककनाक्तयागनडाकाय॥ वाकृधिदिगूदव॥ आगंदव॥ गदस॥ कल
क्षायक॥ रवराश॥ थाका॥ नक॥ पनिकर्मवियक॥ मंशुलविसऊन॥ स्वगंतय॥ मक्षानिच्छय॥ वित्यूजा॥ जाद

सिरुनूय

थ
दि

सुखा॥ दिगुसक्तयद्वाक॥ समयावक॥ डाऊनाडान्य॥ पूजानयसिडा॥ कलंशल॥

॥ धनिसयाकविधि॥

॥ वाधानयंकविधि॥ ज्ञायांकलहासुखंमनयंवगवयागुधतिथाकय॥ ७ वाय॥ मुखलाऊनअधिमानवऊसुनावंध

नयूजानिमित्थार्थ॥ गुनूमल॥ यंवगवयाय॥ सिधनय॥ मलुलथिल॥ स्वांवाय॥ मुनि॥ जिसमाधि॥ कृष्ण॥ सग्वमट॥

थायिंयूजा॥ रावना॥ धूयनिलाऊन॥ धा॥ सि॥ ऊ॥ स्वांने॥ स॥ धा॥ म॥ पू॥ यधर्मायादि॥ वाधानयंककनसिकागाकअनद्य॥ २२

क॥ यिगदयडां॥ सुख्यदहन॥ धनंदनक॥ धारुसखावाय॥

॥ स्वांमलु॥ दवयूजा॥ सद्गकावनिडाभनय॥

॥ नायदनु॥ कसंसिक्तमू॥ धनियूजा॥ यधर्माऊकामू॥ कियूय॥ हागाकन॥ विसऊन॥

॥ यंकयिं॥ रावना॥ नि

लांऊ॥ गावामटरंगाय॥ यंवगवयविय॥ १॥

॥ वाक॥ ३॥ मलुलथिलसूवधयादि॥ १॥

॥ ३॥ नमासधाकोना

यस्मादा उंजादित्यायस्मादा उंरानवस्मादा उंसहमानसवस्मादा उंगयनायस्मादा उंगयनस्मादा उंसविना
नवस्मादा उंविशवस्मादा उंसगदगियेयस्मादा उंदिकुनियस्मादा उंमूर्ययिथस्मादा उंमिवायगिथः
स्मादा॥ ॥ रावना धूं धा सि ऊ हां नेवद्यादिथधर्मोत्थादि ॥ (धोवा द्वाय ॥ अर्घ ॥ ना अर्क द्वा मि. गय ॥

॥ ॥ उंनमारुगवत्यआदित्यायकाष्ठिवगमगाय. आदित्यगर्हसहूनाय. कलिहृद (ग) रुवाय. अन्ननसहि
गाय. कर्कतनयमनागाय. वधूककुसुमसहृणाय. वकवासवकयूथगन्धजग्यायविनाय. उनंगनथसमान
धाय ॥ अर्घ ॥ अर्क गगन्धयूथधूयदीयायसावयगिगृह्णिगान्दानयलं
थायमानअमूकनिमित्ताथआदित्यादिअर्घयगिहृस्मादा ॥ ५१२ दक्षणा ॥ (क्ष) क ॥ उंनागसंरुवसंकासय

॥ वृषिध सूर्योदक वृषिध द्वाय ॥ नृत्वंस

॥ वृषिध सूर्योदक वृषिध द्वाय ॥ नृत्वंस

॥०॥ निरुद्धावचनविधिः ॥

॥ २८७१ ॥ अधोसंग्रहविषयः

ॐ विष्णुयूजा ॥ ॐ किं कृष्णाय ॥ स्वस्वस्वस्वस्व ॥ समयावका ॥ कडगावा ॥ गणवका ॥ मूकसूचि ॥

11 - 1123

॥दूसलकूङ्ग॥कूल॥सम्बंमट॥बलि॥यंवगवायाग॥थरिथाकथ॥श्वाय॥गुन्मधुल॥यव

॥ स्वस्तिकसंगस्य ॥ गुग्गुलुलदक ॥ लंछवल्लियूजा ॥

॥ शिवना ॥ कावाम

गरुंगाय। नीलाञ्जन॥ ॐ दीभावागय मृदु दृष्टिदायकं हारिदिकाकाक॥ रुलाशिवकविय॥ कलसम्भवं मटसरवताधूय
निलाञ्जन॥ विधिश्चंयूजा॥ दवयूजा॥ रावनाधूंगावामटरुंगाय निलाञ्जनविधिश्चंयूजा॥ वलिवियवाकयूजा॥ मधु
थियस्वांवाय किगन॥ मुक्ति॥ हाराकन॥ दमायन॥ जूहिबोद॥ सम्यहाय॥ वित्यूजा॥ दंशजादकक्षा॥ विसृजून॥ कक्षा
मधुयागालडाळा॥ आगमसनयसिद्धाजालंयूजा॥ समवकागक्षवका॥ धरियाहिगुदनदूषाविधि॥ ॥
सतिकुन्नु॥ कलसम्भवं मटमूखगनाधयं वराय वलियागुधगिथाकय॥ क्षम॥ धवाय॥ गुन्मधु॥ यं वराय दाय॥ सि
॥ जूलिं ॐ नायकाकक्षाय॥ नखस्यंदकाय॥ धगय॥ मधुलथिल॥ याधजानमृ॥ किगन॥ मधुलविसृजून॥ तिसमाधि
कलक्षाधिवाहनकक्षासम्भवं मटजूलिं ॐ नायमूखनायधगिविधिश्चंयूजा॥ यधमोदियक्षयक्षनिंयूजा॥ यलांघं
॥ शीलक्षिसरावना॥ शास्त्रदवीयमास्तिगानीनात्यनसन्निरासिंदूनसयमदस्माशीलक्षिविराव॥ ॥ यूजा॥

थ
क

शुभिलाङ्गुलनयन ॥ अग्निस्नान ॥ अग्निन्याहूति ॥ चतुर्जाधूय ॥ दधयूजा ॥ रावना ॥ धूपगावामनरुंतायनिलाङ्गु
नविधिथंयूजा ॥ दधगाहूतिविधय ॥ ॥ ध्वंलि ॥ दीमावागलस्यस्यंदकाय ॥ स्वस्तिकसकय ॥ गुनूमधुलदनक ॥ मट
क्रस्कंसिधमूनियूजायधर्मोत्थादिव ॥ ॥ क्षागाहूतविसृज्जन ॥ ॥ क्षिद्ररावना ॥ लाहागिनवका ॥ क्षीलवसुनय ॥ सा
द्यलिमिवा ॥ दिगल्लय ॥ स्वस्तिवाक ॥ लज्जालाय ॥ तनग ॥ नायिगदसूयूजा ॥ मासकलक ॥ कार्तिकनंरुगिव्यक ॥ नृसिध्वंक ॥ ॥ २४
नानयाक ॥ अश्वलक्षाममाहूयक ॥ लनंदायक ॥ कृष्णलंवनदायक ॥ त्वालसियक ॥ सवासस्नानयाक ॥ धनयन ॥ धडाशथास
कय ॥ यंवयलवनमानसय ॥ यंवगायविधय ॥ स्वांक्षवाक ॥ विसृज्जन ॥ ॥ धनकृष्णरिधकस्नान ॥ गाथा ॥ यद्वज्रल
स्यवलमालागीतं ॥ सनीत्ययत्युयधूधे ॥ वलदीयद्विद्विगगा ॥ ॥ यूजाविधोयनिसमंविमले ॥ यगृते ॥ गत्सङ्गलंरवकु

नवयल्लमारिधके४५

॥ धनसिन्धुः ॥ दीपनासिद्धिगतायाऽवसुक्ताय नमः ॥ मरु ॥ ॐ दिवा वाससखाहा ॥ धन

रिगुवलाश्रयकुन् ॥ ह्रस्वजानकं सिध्दायकं ॥ स्वस्ति वाक् ॥ सिनसरुनिनविषयजूड्डानविषय ॥ मन्त्र ॥ ॐ दगसुर्व्वज्ञानां ने

धातुकनमस्तु न यूष्माकं यूजना र्थाय मकुटयं च कुलारु व ४१।

॥ॐ कुरु सत्वम्॥ हारिदिकां कावायकः॥ॐ अ० ४ भा० ७॥

स्वनाद्यणिं सगान्धनैर्ऋतुगन्धि रमालावलंविनस्कान्धैर्दृष्ट्यादा॥ लाहाग्निप्रकाशिरुल्लय॥ धलिद्यानसखां रुद्राकण्यः

शिवना॥ ह्यन्यथा कन्धा रिन्नं वा धि विरुं खनूयं शिवना॥

॥ न तास्वद्वयार्थवीजाक्षरं नानाधातुरुल्लिख्यदकतिषरुवनं ॥

गत्वारुस्मादाकृश्यारुलंतीनविचित्र४५।

॥ ज्ञायाधूनि यूयलाघं सुत ॥ बालकना नयत्यसगयाऽ। नास्ति सख

वाचं॥ ज्ञानकं बलविद्यमं विद्य॥ मनु॥

॥ अथ गङ्गा मूला ह्यनाला कपरा कली गृहीत्वा पाणी नायाणी वृद्ध

मित्रयज्ञं स्वाहा ॥ घृणाद्द्विय ॥ मरु ॥ उंथाऊ काश्चिंयगिह स्वाहा ॥

॥ धूलायागनथियक ॥ यंलाद्यंमुनि ॥

॥ ॥ दहावलिविय ॥ कमालियूजा ॥ भाहानी साधन ॥ मधुलथिल ॥ स्वांगन ॥ पूर्यायाय ॥ हाताकन ॥ दमायन ॥ आः

विर्वाद ॥ सग्वगय दैदं धा यूजा ॥ सवाद्गि ॥ पूवहाय कलक्ष ॥ दहावलिक्षाय ॥ विसऊन ॥ मधुयाग सिधमूकललडाः

काय ॥ ॥ दीभावागा यालंयाक ॥

॥ ॥ निपादिगुदहाविधि ॥

॥ ॥ ॥ नगरीमनथक्रियाविधि ॥

॥ ॥ ॥ दसवक्रु ॥ कायांकलसग्वंमगनागद्य ॥ मुखटवल्लिधगिथाकथा ॥ उवाय ॥ पूवराऊ संकल्य ॥ रीमनथ यूजाक्रि

यानिमित्थार्थ ॥ गुनमधुल ॥ यंचगद्य ॥ सिधगय ॥ मधुलथिल ॥ स्वांवाय ॥ लंखवलिविसऊन ॥ जिसमाधि ॥ दूधायिवा यूजा ॥ की

लंरावना ॥ कीलंगाय ॥ उष्टीववियामरु ॥ उंघघघाटय ॥ २त्यादि ॥ कृष्णधिवसन ॥ कलसग्वंमगादियूजा ॥ पूवाद्यव यूजा ॥ कू

दवनसस्यंदूकाय॥ जातकर्मनीस्य॥ वृत्तादहागा॥ हागरिणीकाकाय॥ स्वांगत॥ दक्षायूजा॥ सवतादि॥ आहीर्वाद॥ मधुयागाम

तडा॥ वलिश्चयमडा॥

॥ॐ॥ गिदूसवक्रिया॥

॥ सगिकूदूवलिविसऊनवलिश्चय॥

॥ थनलियागासननव

गदमधुवाय॥ थडा॥ गदयगिरास्यंवीदीदावस॥ दिग॥ सवाय॥ रुकि॥ मधि॥ सिसादलआदिनदिग॥ सवलाकिस्वास्यं॥ लाकया

ध
ज

लयगायघाय॥ यंचसूकानडयक॥ जग्निक्कुदन॥ समसंधायनाधूनकाव॥ ॐ॥ नायअलिंकायकलक्षाय॥ वस्त्रस्यंदूकाविश्व २६

ककलसग्वमटनागवमखट॥ शीलक्रियदयकिणिकिदाआदाअलिं॥ द॥ हावलियलिकर्मनगय॥ ॥ॐ॥ वायगुनमधुः

ल॥ यंचगवा॥ सिधगय॥ मधुथिल॥ लंखवलीक्षय॥ गिसमाधि॥ यंचवकायाथग्वय॥ कक्षाधिवासन॥ कलक्षादिकिदाआदायू

जानेवयादि॥ पूषन्यास॥ यंलांघमुक्ति॥ यधर्मादि॥

॥ अग्निस्त्रयन॥ यूलंदव॥ मधुल॥ पूजाविधिश्चंयूजा॥ ॐ॥ आग्नादूः

दवताहृति॥ २ ॥ अथ यागिगृहहस्तकीया॥ दहकर्मशानविधिथं॥ यगिष्ठाविधि॥ धनलिनडाग्रदयूजा॥ ॥
मध्यसुखानहृल्लगसं॥ रावना॥ रावनायगिसनादवीमात्मानंरावयत्॥ कणाखददथभूकानवदुमधुल्लगस्थायविषं
कात्र, गदस्मितांगुनूवृद्धाधिसत्वादीनां भूवरासस्यसत्त्वानां कृत्वा, अगनिष्ठं भुवनगत्वा, मदायगिसनायमुखात्, सगलयति
वानान्पूजतागगलयद(हादृष्ट्य॥ आकर्षण॥ उँवजवक्रहं॥ ३ ॥ उँवजोँकूँज॥ उँवजयागिहं॥ उँवजशूटवाँ॥ उँव
जाँवहाहा॥ धूप॥ कर्पूर॥ नीलाञ्जन॥ स्ना॥ विरुञ्जीखण्ड॥ ऊँजगायू॥ स्वांगायू॥ नेत्राय॥ मट॥ धन॥ पूषाया॥ यलाघंभुग॥ जाय॥
उँमहिधनिवजहिमहायसैगिँवहं॥ रुद्र॥ रुद्राहा॥ यलाघंभुग॥ १ ॥ पूर्वस॥ स्वानतसं॥ रावना॥ आर्यमहासादसयमदः
निंरावयत्॥ धूप॥ क्षीखंद॥ विगू॥ कस्तुरि॥ ऊँजमहाकू॥ स्वाँडत्यन॥ नेत्रिय॥ दीपहाकू॥ विकं॥ हासया॥ जाय॥ उँजमृगवत्रवत्र

१॥ यवत्र विष्णुर्द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वाहा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ २ ॥ दक्षिण ॥ स्नानं संरावना ॥ आर्यमहामायायूरीमात्मानं रावयत् ॥ धूप
कक्षणी ॥ विनयं वगन्ध ॥ ऊऊं ॥ आडं ॥ स्वां ॥ नरुल ॥ नेविश ॥ दीप ॥ काविकं ॥ जाय ॥ उं ॥ नृमृगविन्नाकिनीगर्हसंनक्षत्रिज्ज
कर्षादिर्द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वाहा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ ३ ॥ पश्चिम ॥ स्नानं संरावना ॥ आर्यमहामायायूरीमात्मानं रावयत् ॥ धूप
धी ॥ ल ॥ चिरु ॥ नक ॥ वन्दन ॥ ऊऊं ॥ मकाडं ॥ स्वां ॥ काडं ॥ नेविश ॥ दीप ॥ यकाविकं ॥ जाय ॥ उं ॥ नृमृगविन्नाकिनीगर्हसंनक्षत्रिज्ज
द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वाहा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ ४ ॥ उत्तर ॥ स्नानं संरावना ॥ आर्यमहामायायूरीमात्मानं रावयत् ॥ धूप ॥ वान ॥ ऊऊं ॥ मकाडं ॥ ने
विश ॥ दीप ॥ नामविकं ॥ जाय ॥ उं ॥ विमलविपूलजयवलनृमृगविन्नादिर्द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वाहा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ ५ ॥ धनीलिगदपू
जा ॥ ॥ रावना ॥ उं ॥ नृमृगविन्नादिर्द्वंद्वं २॥ रुद्रं २॥ स्वाहा ॥ यं लांघं मुग्ग ॥ धूप ॥ कुंदन ॥ स्नान ॥ चिरु ॥ नक ॥ वन्दन ॥ ऊऊं ॥ मकाडं ॥ स्वां ॥ काडं

29

सुगति॥दू॥मधि॥ध्वनाय॥रुलमिगसी॥वीदीखानडा॥सय॥मावासा॥दीपयल्काविकं॥अर्घेहिऊल॥नेविश॥जाय॥ॐ
नमारुगवगमधात्कानायखादा॥पंलांघंमुग॥ १ ॥ॐनमाशामदवगामात्मानंरावयन्॥धूपकपूज॥स्नान॥विरु श्रीखं
ऊ॥ऊऊमगाय॥स्नानगाय॥सुगतिधनि॥मधिवयवाधि॥रुलमागसि॥वीदीशायूदासल॥सय॥हांघ॥दीपशायूदासलविकं
॥अर्घेसति॥नेविश॥जाय॥ॐहीगांछुवखादा॥पंलांघंमुग॥ २ ॥ॐअमावदवगामात्मानंरावयन्॥धूपगुंगुलि॥
विरुवकवदन॥ऊऊमकाडं॥स्नानकाडं॥सुगतिवाक्॥मधिलश॥रुलनानसि॥वीदीयल्का॥सयथूसायूल॥दीपयः
ल्काविकं॥अर्घेयूल॥जाय॥ॐवकांगकमानायखादा॥पंलांघंमुगि॥ ३ ॥ॐवधदवगामात्मानंरावयन्॥धूपसऊन
॥विरुकसुनि॥ऊऊमशीयूव॥सुगतिधल॥खां॥यूव॥मधिमथ॥रुलममसि॥वीदिशीका॥सयलं॥दीपशीकाविः

कं॥ अर्घल॥ जाय॥ ॐ वृक्षाय स्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ४ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ विग॥ वरुण
 म॥ जजम॥ यूव॥ स्नान॥ यूडा॥ रुगुति धनिदू॥ वीदिता॥ सययी न वरुन॥ दीयसाधल॥ गडासि॥ अर्घल॥ जाय॥ ॐ
 शमास्यदाय स्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ५ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ कृष्ण॥ विग॥ श्री स्व॥ जजम॥ गाय॥ स्वा
 माय॥ रुगुति साधल॥ मधियूनिमधि॥ न्वाव॥ वीदि कणगुलि॥ सय॥ क्षाल॥ अर्घमू॥ दीय॥ धल॥ जाय॥ ॐ अस्माकमायः २६
 स्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ६ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ गन्ध॥ विग॥ सीन॥ जजम॥ दाक॥ स्नान॥ दाक॥
 रुगुति॥ वाक॥ मास॥ वीदिमास॥ सय॥ वाध॥ रुम॥ मास॥ दीय॥ मास॥ दोमल॥ विकं॥ सय॥ मावासा॥ अर्घन॥ जाय॥ ॐ वृक्षाय नमः॥
 वाय॥ रुव॥ यस्वाहा॥ पंलांघं मुग॥ ७ ॥ ॐ वृक्षाय नमः॥ दत्तात्रेयमात्मनः शवथत्॥ धूप॥ अस्माक॥ विग॥ सर्व॥ गन्ध॥ जजम

सक॥खानसाक॥सुगुतिवाक॥मधिरिनि॥क्रीनसि॥वीदिन्वाक॥सद्यस्वभ॥दीपसाक॥समचिक॥अर्घमाडाक॥जाव॥ॐ
मृगप्रियायस्वाहा॥यंलांघंमुग॥ ६ ॥ॐॐकुदवगामासानंरावथग॥धूपवाल॥चिरु॥गवाचं॥जजमवाग॥खानवाग॥
सुगुति॥सामलजा॥मधिरूयि॥गडासि॥वीदिकावग॥सद्यस्व॥वावालस॥दीपकुलचिक॥अर्घमहिक॥जाव॥ॐआगिक॥
गवस्वाहा॥यंलांघंमुग॥ ७ ॥ॐॐमदवगामासानंरावथग॥धूपकर्युव॥वीगणीस्व॥जजमगायू॥खानयन॥सु
गुतिधनियमधि॥चक्रि॥वीदिमूकग॥सद्यसिंहासन॥अर्घद्वन॥जाव॥ॐॐमनकणस्य॥स्वाहा॥यंलांघंमुग॥ १०
॥ ॐॐ ॥थनवाहवलिविय॥ • ॥वलिसनंस्वगत्य॥वलिरा॥गुंनगांरावथग॥यंकाल॥वायूम॥कुलंवलसग
काकिकिगंलीलधन्वारं॥गदूपनिर्वकाव॥इग्निम॥गुयिका॥गंवरुकिगंवरकं॥गदूपनिर्वकावा॥वूलिकापनि॥गदूपनिज्वा

कालजागंवलिरुष्टु पंचामृतपंचगव्यसद्विगं॥ **ॐ** कूं औं औं खूं डूं वीरुगं पून ४६ कावयतनाग. ही कीरुगं तनसर्वीरु ४३
पीनयत्॥ **ॐ** कूं वज्रतनदवीरुगं द्वितीरावयत्॥ **ॐ** कावयतनाही तलं पून ४॥ **ॐ** अ ४६ वदनलक्ष्मीनामृतमानीयत्तेव
लीनविनयत्॥ गणालाकपालाकर्षण. मूढांदर्षयत्॥ अर्घ्याद्यादि॥ **ॐ** ऊं॥ यं लाघं सुग ॥ ॥ वलिमाला॥ **ॐ** मदायति
सत्र॥ मदासासुसयमर्दनीं॥ मदासायूनि॥ मदाहीतवगी॥ मदासकानूसाविही॥ वृद्धावेवमात्माना. विद्यादवीमदावला॥ मागः २९
कीरुकृतिवेव. गानादवीगथाकुं॥ वज्रसंखलया॥ वेव. मदा॥ वेवगाग॥ वेवव॥ मदाकालिचदूगीथ वज्रद्वितीथ गथाप
ना॥ स्याहीव वज्रयाहीव. वज्रयाहिमदावला॥ वज्रमालामदाविद्या. गथेवामृतकुं॥ अथनाजिगामदादवी. कालक
र्षीमदावला॥ गथाधन्यामदारुगा. यमकुं॥ लिखवव॥ पृथदकीमनिचूण. सुवर्णवाहीवयिगला॥ मदागजागथाद

वी. धन्याव विदुर्मोहिनी ॥ वादस (श्रेक) उदावेव. वृडा ४ कि कि कनायका ॥ कायालिनी मस्त शगा. धन्यालं क ह्य वी गथा ॥ अन्या
श्व वदवा विद्या सत्वानुगद कालिका ॥ गयथा ॥ काली कलाली कुंरा ॥ ६ ॥ धिनी कमलादि ॥ हानि गीदवी काणि. छीम गिदविः
पिऊनलं वयं लव कालयाणि ॥ कल (६) दवि ॥ यमदूती यमनादसि. रुगय सनि यगि च मंगध पृथं धूपं वलिदास्यामि वक्षाः
कनूमस सर्वसत्वानां सर्वरुथाय वर्यः ॥ जीवतु वर्य ॥ ६ ॥ गं प ध्यतु सवदा ॥ ६ ॥ सिद्धातु मरुपदा ॥ ६ ॥ स्वादा ॥ ॥ पूष्यादि
पूजा लाघरुग ॥ ॥ धन ऊजमान गुनूम ६ दनका ॥ सीऊन कवलास ॥ द्रुखं गस्यं ॥ अर्थ ६ ॥ ख ६ ॥ दू ६ ॥ अदगा. दा ॥ खालखां
गस्यं गदम ६ लयाथा सडा ६ डा ॥ अर्थ नल दन ॥ मरु ॥ ६ ॥ अर्थ मदाय गिसय अर्थ यगि च स्वादा ॥ पंलां धं रुग ॥ ॥
यगिसवन मरुयं सर्वसंयक्ति दायिना ॥ ६ ॥ ख क ६ ॥ दूर्वा रा. वजसत्वाम कायवा ॥ १ ॥ ॥ ६ ॥ दनील ॥ ६ ॥ अर्थ मदासा दसः

यमोदये अर्घ्ययतिष्ठ स्वाहा ॥ यंलां घंस्तु ॥ कुरु वरुण मदाधाना सकृन्नाम शीषणी दूर्वा करिषणी दन्तीका धवजीन
 माम्यदं ॥ २ ॥ पूषयाग ॥ ॐ आर्य मदा मायूयये अर्घ्ययतिष्ठ स्वाहा ॥ यंलां घंस्तु ॥ मदा हाना रुवा दवा ॥ हसव
 र्ण्यरावन ॥ विद्याना ह्री मदा तानं मायूनी पहा माम्यदं ॥ ३ ॥ महिका ॥ ॐ आर्य मदानसा विष्णवे अर्घ्ययतिष्ठ
 स्वाहा ॥ यंलां घंस्तु ॥ वेदूयै सूक निरोहं मदना सूक विथमा ॥ काका र्धे दनी विद्यान मामिदिव नूयीनि ॥ ३०
 ४ ॥ मन्त्र ॥ ॐ आर्य मदा णीतवत्ये अर्घ्ययतिष्ठ स्वाहा ॥ यंलां घंस्तु ॥ चान्वकुं विसाना क्षिप्रकाशान्द्रासिनी
 ५ ॥ मन्त्र ॥ मदा दवी नमस्तुत गता गनी ॥ ५ ॥ ॐ ॥ आदित्यया वल ॥ णिजल ॥ आ ॐ ॥ अक्षरा ॥ ॐ नः
 मारुगवत्य आदित्याय ॥ काक्षय गायय ॥ आदित्य गार्ग संरुगाय ॥ कलि रुद ॥ रुवाय ॥ अन्वदासदिगा ॥ कर्क

टनयप्रनागवन्धुककुसुमसदृसरुगाः नकुवास नकुपुष्पगन्धयस्त्रायविनाय कुलं गवथसमावृढाय दवदा
नवकुंराकुञ्जाकिन्नाकिन्नसदिनाय अवगवश्चरावतमनूयाणांदिनाथाय ॥ दंयदमकुलसध अन्वययदं
दमकक गन्धयुष्पयदीयायदाव वलिक्क यतिगृह्णां नभारुगवगयस्यकियत कर्मगस्ययीतिकवारुवादा
नयतिअमकस्य क्षाकियुस्सिंक्वद्वगियरु नभस्य आदिशाय अर्घ्ययतिरु स्वाहा ॥ यंलांघंमुग ॥ नागसंरुवसंका
हायप्रनागसमूहवंसकावधवथमावृढं वरुसूर्यनमामादं ॥ १ ॥ सां ॥ मतिशायूदास ॥ अथवाडाहा ॥ डंनमः
शामदवाय ॥ अमृगारुवाय ॥ नंरासगाय वरुसपूणाय धववपुष्पसदृष्टाय स्वीवसमूहवाय अणय (गागाय ॥ ६ ॥
कुवासकुक्कगन्धयस्त्रायदीनाय दंसमावृढाय दवदानवकुंराकुञ्जाकिन्नरुवसदिनाय अवगवश्चरावतमनूयाः

नांदिताथीय॥ ॐ दंगदमलुलमध्वजून्यविष्णु ॐ दमदकगंधपूषधूपयदानव. वलिच. प्रणिगृह्णानंमा ३ मु
गयस्याक्रियत. कर्मकस्यपीतिकवारुव. क्षाकिपूषिकुवू. वेष्मजन्मस्य. सामायजूर्ध्वपगिदखादा॥ यंलांघंमुता॥
दधिसंखुखानारंक्षीलादीननसकृदं नमामि क्षाणिनंददं. हंरुगंयक्षामामदं॥ २ ॥ मं॥ पूल. यल्का॥ ॐ नमारु
गवगजंभावाय. महादवपूनाय. पृथ्वीगर्भसंरुगाय. हृगुक्षसंप्रकालिगाय. नकवासनकपूषधूपगन्धयक्षायविगाय. ३१
अवत्यदक्षारुवाय. शानवाक. भागाय. द्वागवधनूधाय. वरुधक्कुलदवताय. दवदानवकुम्भ. क्षाकिन्यकनसदिगाय
अवगनश्चगवनमनूयाक्षान्दिताथीय. ॐ दंगदमलुलमध्वजून्यविष्णु. ॐ दमदकगंधपूषधूपदीयावदानवः
लिंच. प्रणिगृह्णानंमा ३ ग. यस्याक्रियत. कस्यपीतिकवारुव. क्षाकिपूषिकुवू. क्षणीयजन्मस्य. जंभावाय. जूर्ध्वपगिदखा

ले
५

हा ॥ यं लांघं मुग्गा ॥ तं वाचनातिकातिव. क्षवश्चापिकवाकवं ॥ यमासनस्त्रिगं सोम्यं वादिगायनमाम्यदं ॥ ३ ॥ वृ ॥ श्रीका
॥ ॐ नमो रगवत वृधाय. ॥ क्षमसूताय. वादिहीयूताय. अर्कक्षालिषुकमहासहस्राय. सूर्यदेवताय. मधुदाक्षारुवाय. अ
श्वय. ॥ गाय. पीतयूय पीतगंधयस्त्राय विनयीयाय. कमलासमानुदाय. देवदानव. कंशाक्ष. वाकिनासदिगाय. अवगव
रगवन्मनूयानां दिगार्थय. ॥ दं गदमलुलम. ॥ ३ नृपवक्ष. ॥ दमकागंधयूय धूपावलिं व. प्रतिगृह्णतानमास्तुगा
यस्य क्रियत. कर्मकस्य पीतिकावाम्यदं. दानपरिष्ठाकियुस्त्रिकव. वेक्ष्णुमस्य. वृधाय अर्घ्यं प्रतिगृह्णतानमास्तुगा ॥ यं लांघं मुग्गा ॥
तं वाचनातिकातिव. क्षवश्चापिकवाकवं ॥ यमासनस्त्रिगं सोम्यं वादिगायनमाम्यदं ॥ ४ ॥ वृ ॥ लृ ॥ गच्छ ॥ ॐ नमो रगवत
वृहस्पतये. अंगवसूताय. वरुधेदाय. देवतागुवायाधाय. काकेन वक्ष्मय. सिंधूदाक्षारुवाय. देवदानव. गंधर्वास्त्रवगव

ले
दि

उक्तं शास्त्रादि किं न्यतः सदिनाय. अवतनश्च रावन् वृहस्पतय. सदिनाथाय. ॐ दंगदमलम (ध) इन्नुयय ॐ दमदमगं
धयूषधूपायदानवल्लिं. यतिगृह्णतान् नमाश्चुतयस्य कियत. तस्य पीतिकनारुव. क्षातिकेनूवन्तज्जन्मसावृहस्पत
तियजूर्धयतिष्ठस्वाहा॥ यं लां चं शुत॥ सप्रवानाधिवानूधं. क्षात्मानकां वनायरां वलतयाशमालिनं वावस्यति नमाम्यः
सं॥ ५ ॥ ॥ ॥ मृति. कयगुलि॥ ॐ नमो रावन् वृहस्पतय. रगुसूनाय. सूनायाधाय. वेनावनकुलदवगाय. दधिकृष्टसं २२
काक्षाय. रागाद (क्ष) रुवाय. रागोव (रा) गाय. शुक्रवास शुक्रयूषधूपदीपय हाय वीगयियाय. पुनगावृहाय. दवदान
व. गंधर्वा सुनगावृह. कृष्णादि नमसदिनाय. अवतनश्च वासदिनाय. ॐ दंगदमधुलम (ध) इन्नुयविष्णु. ॐ दमद
तगन्धयूषधूपदीपायदानवल्लिं. यतिगृह्णतान् नमाश्चुत. यस्य कियत. कर्मो तस्य पीतिकनारुव. दानयति जूम्कस्य क्षा

किं नूयुषिंच वृक्ष ऊ नमसा हुक्काय अर्घ्यं प्रति दत्त्वा दा ॥ पंलाघं सुग ॥ नानामासु ससमंदवं हुजारुदुवं गस नं ॥ यस्मिं
वापि दुसुं व दानवंगुन नमाम्यहं ॥ ६ ॥ ॥ ॥ न मासमडं नमो निश्चयाय आदि स पूजाय द्याया गुरुं संरुताय यम
सागाय नीलवर्णाय उविनद (हा रुवाय कृष्णवधनूदाय अक्षाय दवताय नीलवास नीलपूषा गंधधूपदीपयस्त्रा
यविताय दवदानवगन्धर्वो सुवर्क सांभु किनी सदिताय अवगन रराव नूदानयि अमृकदिता र्थाय ॥ दंगदमं तुल
मध्व अमृय विष्णु ॥ दमव गगन्ध पूषा धूपदीपाय सनं वलिं व युतिगृह्ण गान् नमो इमु तयस्य क्रियत तस्य प्रीति कवा
रुव दानयति अमृकस्य ॥ किं युषिं कू वृ का ष्य प (गागाय ॥ ६ ॥ ऊ नमसा हु निश्चयाय अर्घ्यं प्रति दत्त्वा दा ॥ पंलाघं सुग ॥
नीलारं गी ह्म ददं कूर्मकाय समाकमं ॥ वसिष्ठा वि सं निरुक्क कृष्णवर्ण नमाम्यहं ॥ ॥ ॥ ॥ नाना नाडावगन्धवाग ॥ ॥

ल
न

उं नमः नादव. सिंहसूगाय अमृगपियाय. कृत्ती (६) नदवगाय. मलयदा (६) रुवाय. कुरुवर्क्षाय पार्थि (६) नागाय कुरु
वास कुरुयुषधूय दीयंगान्धयस्तुय विगपियाय. भयनथनूदाय. दवदानवगान्धर्वसूतगानूकं राक्षसकिनीसदिगा
य. अवरुनशरुगवन्दानयलिदिगार्थाय. ॐ दंगदमलुलम (६) इनुय विष्णु. ॐ दमदगगान्धधूयाय सानवलिनं
प्रतिगृह्णतान्. नभाइस्तुगयस्य कियतगस्य पितिकवारुव. दानयलुक्षा कियुसिंकुव. ६५५ रुमस्य नादव अर्थेयः ३३
किच्छस्वादा ॥ येलोचंस्तुति ॥ द्विजमिगसुसंस्तानं मानवानां रयंकनं ॥ यामसुं मर्द्धकायाश्च विधूयुं दनमास्यदं ॥ ६
॥ क ॥ कल. कावात ॥ उं नमः ककवका ६ सूगाय. कालया ६ यगदकाय. त्वमकलदवाय. धूमवर्क्षाय शीयव
गद (६) रुवाय. अमृग (६) नागाय. धूमवासधूसयुषगान्धयस्तुय विगपियाय. धूमनथानूदाय. दवदानवकुरुक्षु

किं निसदिगाय, अवननरुगवन्दाहायहिदिगार्थाय, ॐ दंगदमल्लमध्वजूनप्रविष्ण ॐ दमद्वगय्यधूपदीः
धापदानवल्लिख्यप्रतिगृह्णान्नमाइस्तुगयस्यक्रियकर्मगतस्यपीतिकारुवदानयल्लुमूकस्य ॥ निपुसिंक्नूस्तद
ऊन्मस्य, कतवज्ज्येयगिह्मसादा ॥ पंलांघंस्तुग ॥ स्वभयाहाकवद्यगुं, कायापूह्मरुषनं ॥ विविगविगददार्ंथागिकरुन
साम्यहं ॥ २ ॥ ॥ ज ॥ हन, अद्वत ॥ ॐ ऊन्मनऊन्मनदंष्ट्रदवगाय, वेनाचनकुलसंरुगाय, सार्थसनायविस्साय ॥ ध्व
नवर्ह्ययल्लुक्कासध्वनय्यधूपदीयगन्ध, यल्लापविगाय, दवदानव, कूंराह्मकिनीसदिगाय, शाबाद ॥ ॐ ह्वाय, अवन
नरुगवन्, दानयल्लुदिगार्थाय, ॐ दंगदमल्लमध्वजूनप्रविष्ण ॐ दमद्वगय्यधूपदीधापदानवल्लिख्यप्रतिगृ
ह्णान्नमाइस्तुग, यस्यक्रियकर्मगतस्यपीतिकारुव, दानयल्लुमूकस्य ॥ निपुसिंक्नू, सर्वदवसादवतासवीथ

कथियऊ नमनस्य ऊ नमदवगाय अर्घ्यं किं च स्वाहा ॥ यं लां घं सुता ॥ शुभांशवृक्षसंका हां सर्वदवनमस्तु गां सर्वाय सर्वद
 वानां ऊ नमद^व नमाम्यहं ॥ १० ॥ ॐ ॥ मिमलुदयक ॥ ७ ॥ ॥ श्रीमान नैमल्यकानस वस्त्रसंदय ॥ स्वस्तिकसस्त
 न गुनमधुलदनक ॥ वलिखानतन्या मटयूजा ॥ वलिविसऊन ॥ विषयरावना ॥ निलाऊन ॥ लाहागिनका अविनंगा
 दिगल्ययउथां ॥ साछालिमिवानगाय साछयक ॥ लिमिवाजांका अद्रवालथनक ॥ मासकक ॥ नोयाहसूयूजा ॥ लसिधंका उकथा २४
 सगसां ॥ अवनसामनं ॥ माद्रूपक लाहासगसां पिवसमूदया लवनलूय ऊडालं वगायाडा ॥ आचार्यं हां लवलव नाकादि
 या कस्य ॥ अवनान ॥ हां के खानासवाठ पंचगंध ॥ पंचामृता ॥ सिऊ खानासवाठ पंचाषधि ॥ पंचवल्क ॥ डसी डालगसि पि
 लासि इंदवसि ॥ अय्या ॥ धनिठनसग ॥ अवनसग ॥ सर्वकर्मिक कलनलां याचक ॥ पिडासमूदया लवनं हायक ॥

ल
क

कसलंखादि॥ ॥ यं वगंधनक्तसव्यक॥ ६० वरुसुगन्धगिनकअंगलयनायखादा॥ ॥ नखाचिकनंदयक॥ ६१ व
रुसुगन्धनेलजंगलयनाखादा॥ धमिधूनकाडाथडाशथाससंगय॥ यं वगयवियायगिलं नक्षत्रविनालि गायकस
गिसादकाविथ॥ नूचिगजधिसानयाय॥ स्वस्तिवाक्क गिचक॥ ॥ धनलि॥ नवगुहदानवियक॥ ७ ॥ वि
य॥ आदित्य॥ स्वां॥ मावासा॥ आदित्यायकाधयगागायअगिगारुसंरुगायअमिगारुकलदवगायदानपलिअम
कअयूनाभग्यकामनार्थसर्ववागायकांथर्थनऊगघटिगव्वंदनकाधनूगुथंमर्कसंप्रययकासदांधनूपगि
सुर्थसंप्रययामि॥ मावासाविदानविडाकयूजा॥ ददक्षा॥ १ ॥ सा॥ शायूताम॥ वां॥ सामायदीवादीवहु
वसंरुगायविष्वदवगायअमूकस्य॥ ६२ निर्थ॥ नऊगघटिकं॥ वां॥ वं॥ गुथंमर्कसंप्रययकासदां॥ वां॥ वं॥ सुदक्षिणां

प्रतिसाधार्थसंप्रदाययामादं॥दक्षिणसंख्यपूजा॥ २ ॥अं॥प्रकाशसा॥अंगनायरुमीसूताय॥शिवदवगाय,दान
 परुअमूकस्य॥क्षांखर्थनऊनघटिगअनघान्दुखंमझंसंप्रयक्षामिइहं॥अनघान्प्रतिसाधार्थदक्षिणसंप्रदायकयामादं॥दक्ष
 णाप्रसापूजा॥ ३ ॥वृ॥श्रीकालवृक्षयशामसूतायभादिनीयूगाय,वृधदवकायअर्कक्षालिगुकमहासदृक्षाय॥
 सूर्यदवगा,मघदाक्षारुवाय,अगय(गागाय,दानपरुअमूक॥क्षांखर्थनऊनघटिगअनकसुवर्द्धुखंमझंसंप्र ३५
 यक्षामादं॥सुवर्द्धुदक्षिणप्रतिसाधार्थसंप्रदायकयामादं॥दक्षिण,लपूजा॥ ४ ॥वृ॥गच्छपीतवसु॥ल॥वृह
 स्मृतयरुमिसूतसूताय,वदुर्वदाय,दवानांयाधायअक्षारुदवगाय,दानपरुअमूकस्य॥पक्षांखर्थनऊनघटि
 तपीतवसुसुवर्द्धुखंमझंसंप्रयक्षामादं॥दंपीतवसुदक्षिणप्रतिसाधार्थसंप्रदायकयामादं॥दक्षिण,पीतव

ले
 न

[illegible]

ॐ नमः स्वस्ति कसमान ॥ ॥ रावना निलांजन गात्रा मगरुं च य मरुं वृथा ॥ धनलि चंद्रविं वृजडा वा दारं जांक ॥ सूर्यः
विं वृजडा नानं कं ॥ धनलि आनदा सायायिन पातासन जूष मंगल वाय ॥ ऊवक गन ॥ धनलि आनदा साया दजान हि
लय गिल्ले क्षा नय ॥ धया ध्यान का धि ॥ धया ध्यान नथ नय ॥ ॥ धनलि रिगु वना स स्वस्ति वाक्क यदयं नथ स दजाय क
॥ लिरुल साचकं रु क रुक गाहिन गात्रक नाकन ॥ धनलि सुवला स सिगलान सिधु दाय गुनू न ॥ धनलि रुट सान दि
॥ मरु सा दार्क ॥ थुलिं मरु सा १० ६ दारुल स्वां डा साया गु ज्वा या ना क गिल स द्वा क ॥ वाक्क ॥ डं न भारु गा वल सव
गला क य गि ॥ डं डं डं डं डं (ॐ धय श वि (ॐ धय श स म सान वरा स स न ग ग ग स र रा व वी हु च डं डं डं व वि ऊ या य वि
हु च अ रि वि क स र्व ग था गत डं अ ४ द न श आ यू संधान जी (ॐ धय श वि (ॐ धय श ग ग ग स र रा व वि हु च ॥ स स स ल हि

संवाधित सर्वगथागगावलाकिनी पद्यानमिगायत्रिपूत्रणी ॥ दक्षरुसीयगिष्ठिग सर्वगथागगदयानाधिष्ठानां
धिष्ठिग ॥ ॐ मूद २ मदा मूद वज्रकायसंदवग सर्वकर्मावनक्ष यतिनिवरुय सर्वगथागगसमयाधिष्ठिग ॥ ॐ मूनि २
मदा मूनि विमूनि ॥ ॐ मति २ मदा मति सुमति गथगारुणकाटियनिष्ठुवाविह्व वक्ष ॥ ॐ द २ जय २ विजय २ सन २ सुन
ल रुवय २ सर्वमूदानां धिष्ठिग ॥ ॐ ह्रु २ वृद्ध २ वज्र २ मदा वज्र वज्रगारो जयगारो वज्रकालागारो विज्राह्व व १ वज्रकाला ३ ॥
संरुव वज्रवज्रिणी वज्ररुवकु ममहावीरं सर्वसत्त्वानां च कायपविष्ठुच्चिंद सर्वगतियत्रि ॥ सर्वगथागगा (श्रमां) ॥ ॐ
वृद्ध २ सिद्ध २ विधाय २ विवाधय २ भावय २ विभावय २ (हा) धय २ वि (हा) धय २ समस्तान्भावय २ ॐ मूद २ मदा मूद
मदा मूदा मदा मकु पदखाता ॥ संपूर्ण पूर्य सदसंवा दक्षरुसंवा जूक्षरुवहारं वा दक्षध्वजयगाक पृथधूय

दीपगंधनेवशादि सर्वपूजारिः पूजयः ॥ मांसस्त्रिंशत्सक वर्षं सकादिनां ११ सदसुवद्वदर्थं च दूर्वाकुण्डादिकल
जासद्विगं ॥ ॥ दसाधयजयकनिः ऊयवतिः तिस्रश्शरावन् रगावति समयमनूयानयः सर्वगथागत दयक्षुक्ष
वशाकयः अष्टदानुषरयस्य ॥ सर्वोसांयत्रियूनयः रुयस्य ४ मसारयस्य ४ ऊँजा ४ हंखादा ॥ ० ॥ धानगुलिंदा
नखानः दण्डलीयस्य ॥ स्नानं दूचक ॥ ॥ धनः कायः दूयः दूयनः बूलगस्य अर्घ्यावकः स्नानगंकः पूजा
याकः पणायकाय दन्तप्रतिपाठयूजायाकः स्नानतनक ॥ ॥ धनवक्षजायाय स्वस्तिवाक्यस्य यरुः मधु
लस्रवाङ्मक ॥ धनः नथदयं गुन्यास्त्रासगय ॥ धनदवताहृतिविष ॥ ॥ धनज्जाहृतिविष ॥ ॥ हंखाहृतिविष ॥
॥ हीमूवातादसाः मालकीजादिनः सकतां नडाका विधिथां हि काहृति ॥ ॥ धनमहावलि विष ॥ वलिमालायस्य

यं वयदा न यज्ञा ॥ अथैवायक ॥ विधिः (थं यूजा ॥ यधर्मादि ॥ वाक्यूजा ॥ मधुलथिल. स्वांतन ॥ सुग ॥ आहिर्वाद ॥ यूक्ष्या
यसम्बन्धय. दक्षिणा ॥ बाधांश्च ॥ निस्त्रयाय सूका ॥ गणकव ॥ क्षषाहृति ॥ यूजहायक ॥ सकतां विसृजत ॥ अलिं ॥ नापलि
क्षमायं ॥ क्लृप्ताय ॥ मधुल नरुदवं ह्वसी ॥ चयकलक्षाय ॥ ॥ धनवाजनदयकाडा ॥ दक्षिणाञ्छाय ॥ दात्या. कल
निष्ठास्यं स्वस्थं दुकाय ॥ धनकोविद्यूजा ॥ सम्बंधनीशं समयाचक ॥ मकुटयूजा ॥ गणकव ॥ क्षषवलित्पादिनड ३४
० रवारुययंकं सिद्धिगाथादानवाक् ॥ ॥ किरीमनथक्रियाविधि ॥ ७ ॥ १५६६७ ॥ ० ॥ १५६६७ ॥
यकिस्त्रयायूजा विधि ॥ ॥ ङं नभारुगवले ज्ञार्थमहाप्रतिस्त्रयाये ३ ॥ ङं जा ८ ङं श्रीमद्भक्त्यादि ॥ धावेनिरूपयसः
ग्रन्थाकामलने. वाकांगमनऊगग्. दक्षायकपिष्ठावनाक्षसग(हे)संगासिगादूसदे ४ ॥ सर्वरूनदयावगतित्ववानित्य

वी

समूह्यादिना. नाचन्दयुवमध्यवीरगावगीसर्वार्थसंपत्कवी ॥ ॐ आ १ हूं ॥ सर्वसत्त्वधनदाहता. प्रतिसवामात्मानं शावय
॥ दक्षिणदक्ष आकालनसूर्यमधुलं ॥ वामदक्ष आकालनवन्दमधुलं ॥ कलजायों हूं कावहायं वक्षुविकवक्षं विरा
व ॥ ॥ कमलावलनहं स्वाधिसानं ॥ ॐ मणिधनिवजिणिमहायगिसनहं २ रु २ स्वादा ॥ ॐ सर्वविघ्नहानय
हूं ॥ ॐ वज्रयुधस्वादा ॥ यथाधिसान ॥ ॐ अकावामूखासर्वधर्मानां ॐ आ १ हूं रु २ स्वादा ॥ वलयाधिसान ॥ ॐ आ १ हूं वक्ष
२ रु २ स्वादा ॥ ॐ हनमनक्षहं ॥ ॐ थागमनक्षहं ॥ ॐ आत्मानं सवक्षहं ॥ जंगन्यास ॥ ॥ नृगखदयजुका
वक्षवन्दमधुलं ॥ नस्यायत्रियंकाव. गदस्मिनागुवूवाधिसत्त्वादिनां ॥ अवराससत्त्वार्थकत्वा ॥ अकनिकुरुवनं
गत्वा. महायगिसनायमूखादिनां. सगहायत्रिवावान्. पुनगागगनपद (हा दृष्ट्वा ॥ आकर्षण ॥ ॐ वज्रचक्रहं

॥ ॐ वज्रं कृष्णं ॥ ॐ वज्रपादं ॥ ॐ वज्रसूतवं ॥ ॐ वज्रावहादा ॥ ॥ अर्घ्योदि ॥ ॐ आ ॥ दी ॥ यं वनयेय
वसत्कानाय अर्घ्यं पतिरु स्वादा ॥ ॐ आ ॥ दी ॥ यं वनकाथेय वनसत्कानाय पाद्यं पतिरु स्वादा ॥ ॐ आ ॥ दी ॥ यं वनका
थेय वनसत्कानाय आवमनपतिरु स्वादा ॥ ॥ पूषा न्यास ॥ ॐ मणिधनिवजिहिमसायनिसनहं २ रुद्र २ स्वादा
॥ ॐ विमलविष्णुजयवनजूमृगविबजहं २ रुद्र २ स्वादा ॥ ॐ रुद्र २ सं रुद्र २ ॐ चियवनविष्ठा धनिवृक्षलहं २ रुद्र ३ ॥
॥ ॐ कालीयस्वादा ॥ ॐ कालनागीयस्वादा ॥ ॐ कालकर्णायस्वादा ॥ ॐ ह्वतायस्वादा ॥ ॐ वज्रांकुशीयस्वादा
॥ ॐ वज्रपाणीयस्वादा ॥ ॐ वज्रसूतयस्वादा ॥ ॐ वज्रावहायस्वादा ॥ ॐ गन्धर्वस्य १ स्वादा ॥ ॐ कुम्भदेव १ स्वादा ॥ ॐ
नागास्य १ स्वादा ॥ ॐ यक्षस्य १ स्वादा ॥ ॐ मधाक्कानायस्वादा ॥ ॐ हीनांसवस्वादा ॥ ॐ वक्रांगकुमानायस्वादा ॥ ॐ वृथाय

स्वादा ॥ उं हामास्यदापयस्वादा ॥ उं जमनागमायस्वादा ॥ उं कुरुवर्धयस्वादा ॥ उं जमनप्रियायस्वादा ॥ उं जातिवर्धयस्वादा ॥ ॥ उं कुरुकायस्वादा ॥ उं नासिणीयस्वादा ॥ उं मगसिनायस्वादा ॥ उं ज्ञायायस्वादा ॥ उं पुनर्वसुस्वादा ॥ उं पृथायस्वादा ॥ उं जल्लवायस्वादा ॥ उं मवायस्वादा ॥ उं पूर्वरात्रुणीयस्वादा ॥ उं उरुनरात्रुणीयस्वादा ॥ उं दसायस्वादा ॥ विगायस्वादा ॥ उं स्वागयस्वादा ॥ उं विहायस्वादा ॥ उं जनुनाथायस्वादा ॥ उं मूलायस्वादा ॥ उं पूर्वोषाढायस्वादा ॥ उं उजावाढायस्वादा ॥ उं जुरिचिथस्वादा ॥ उं वषायस्वादा ॥ ॥ ॥ धनिसायस्वादा ॥ उं धनःवषायस्वादा ॥ उं पूर्वरात्रायस्वादा ॥ उं उरुनरात्रायस्वादा ॥ उं नवगीयस्वादा ॥ उं जल्लवायस्वादा ॥ उं रानयेस्वादा ॥ ॥ उं रानयेस्वादा ॥ उं यमायस्वादा ॥ उं वनूनायस्वादा ॥ उं कुरुनायस्वादा ॥ उं जगन्नाथस्वादा ॥ उं नैमायस्वादा ॥ उं वा

यद्यस्वाहा ॥ श्रीगणेशाय स्वाहा ॥ ॐ वक्राक्ष स्वाहा ॥ ॐ पृथिव्य स्वाहा ॥ ॐ वमविगि स्वाहा ॥ ॥ यं लो घं सुग ॥
यगिसवनमसुखं सर्वसंपत्तिदायि ॥ ॐ वक्राक्षे नमः ॥ वज्रसत्वात्मकापना ॥ १ ॥ कुरु वर्धमानसदा धा
ना सकृद्वशीषरीषणी ॥ दूदो कश्चिद्वशीषरीषणी ॥ काधवज्जीनमाम्यदं ॥ २ ॥ मदाह्वना रुवायवी दमवर्धयशक
क्री ॥ विद्यावाहनी मात्माना मायूरी प्रणमाम्यदं ॥ ३ ॥ चान्वक्राविसालाक्षी वक्रांशु वृक्षसिनी ॥ यमनामव ४०
क्षायवी नमस्कृत्य गता गता वि ॥ ४ ॥ वेदूर्यो हुकानिरोसा मदनात्सु कविशमा ॥ काकाक्षे दनीयवी नमामि क्षी
कवती ॥ ५ ॥ पापदहना ॥ कुरु मनूभायितमकुक्षलमवशतमयार्थं काविगं यच्च गत्सर्वमशुद्धाधेयुनगश्य
तिदक्षयामि ॥ अधूना सकृद्वदयमक्षिसंस्तुता गतानामगाधगं श्रीवसकवज्जीनमाम्यदं ॥ ॥

तदनकनं॥ मेरी कनू मदिनायका. वरुवम विहानां रावयत् ॥ ॐ स्वरावधुचा ४ सर्वधर्मोस्वरावधुचा ३६ ॥ ॐ
न्यातां हानवजस्वरावासाकादं॥ यनंलं वं सँकावधका अनावलं. दीयसमूदवका दयनिवर्गं॥ वंकावधसूर्यमधुलं
दूयनिज ४ विष्वाहानिकिनल. वजसूमिवजयाकानं वजयअन वजविहानं रावयत् ॥ तदूयनिजं कावजाग. वरुव
सं. वरुदानं. वरुसत्रज ५ पुसकक ५ साशिरं. कूतंगानरावयत् ॥ तस्माधयंकावजविष्वाकं. तदूयनिजिगाविंवं
श्यायनिलं कावदीजनलं. शिगासूत्रवजरावयत् ॥ सवजविहयनिनयाविष्वांराजं. तस्यावजयर्थकननिषक्षिगा
वरुमस्वा॥ दकिहकसू. पृष्ठयीगा. वामदविगाजुवराध ॥ दकिहयथमरुऊनजुसूत्रवकं॥ दिगीयनवजं. एगीः
यनसवं. वरुथेनखजं॥ वामयथमरुऊनतर्जनीयाहं. दीगीयनजिहूलं. एगीयनधनं. वरुथेनयनहं॥ तस्य

मूर्ध्नि सर्वो लंकालरुषिगं सिंहा नूतं च वंरुगां महापति सनां रावथत् ॥ स चैव विष्णु न विन्दु हं कानवीरु
 यत्रिनामध ॥ महासाहस्यमर्दनी रुषुवर्धुं यिं (मार्च) हं के. नवकपां रुरुगसवानूटं. रुरुदुटी दंष्ट्र कनालवद
 ना. ललिताश्चाथन महारुजय कना दस माक्रम्य माता ॥ कुलकयूनमुकाहान नो यूनरुषिगा ॥ अरु रुजादक्षिण
 यथरुजनवनद. दिगाथनां कुक्ष. रुगीथन धनं चरुथेन खञ्ज ॥ वामयथमरुजन गङ्गा नी वरुयाहं दिगीथनय ४१
 नहु रुगीथनधन. वरुथेन यथायत्रिखञ्जनलं ॥ गस्यामूलमूर्खं रुसु. दक्षि (ह) (ध्वतं. दृष्टयान. वामदक्षिण पति
 मूर्खं गिनतं. नाना लंकानरुषिगधनीनं. महावलपनाक्रमा. नोदवेषा. च वंरुगां महासाहस्यमर्दनी रावथत् ॥
 ॥ दक्षि (ह) विष्णु कयथायत्रिचद्रमधुलमधु मं कानवीरुयत्रिनामध. पाटिति महामायूनी. पीतवर्धुं सेवेयर्थ

किनीं शिखरां शिखरं अश्वानुहं अश्वरुजां नलमकुटीनीं सर्वोलंकालरुषितां दक्षिणयथमरुजुनवनदक्षिणीयनवः
नक्षत्राघटं हृत्तीयनवकं चतुर्थेनखजं ॥ वामरुजयथवागपविशिशुः क्षिणीयनमयूरीहं हृत्तीयनवदयविविधः
वज्रं चतुर्थेनवलधजं ॥ ॥ मूलमूलं पीतं दक्षिणरुषं वामनकं ॥ यवं रुगां मलमायूरीं रावयत् ॥ ० ॥ यश्चिमविः
ध्वयभायविसूर्यमधुलमध्वः गां काववीजयविनामजां मलमकानुसाविहीनकवर्धुदादक्षरुजां शिखरां शिखरां ॥ मू
लमूलं वकं दक्षिणरुषं वामलादिगं दक्षिणवामरुजुनधर्मचकमदां क्षिणीयां समाधिमूदा हृत्तीयनवनदचतुर्थेनअ
रुययकभनवजं वज्रनक्षत्रं ॥ वामहृत्तीयनगर्जनीवज्रयाहं चतुर्थेनयभायविकलहं यं वमनवलरुगा वज्रनधन
अर्धयथैकनीं नलमकुटीनीं सर्वोलकावकुषिणीं नवथोवनयन्ना हाननोयूनरुषिता कुरुनालं रुगीं यतामलमकानुसा

वर्णांशवरावयत् ॥ ० ॥ उरुविश्वपशायनिवन्दुमधुलमाध्र. हांकाववीरुजार्ग. महाहीनवर्णा. गवूज
सनस्रं. सनितवधुगिनगामिमुखं. गथागगमकृतिनी. खरुजामूलमुखं. सनित. दक्षि. (६) सु. वाभनकंद.
विश्वपथमरुजमूरय. दिगीयनवर्ज. एगीयनधनं ॥ वामपथमरुजमूरनीवजयाहं. दिगीयनवलधुज. ए.
गीयनधनं ॥ सचोर्लकावरुषिगा. महाहीनवर्णांशवयत् ॥ ० ॥ अग्रयका. (६) विश्वहाजसूर्यकालीकृष्णक. ४२
नास्यांकलितकंबू ॥ नैमत्यविश्वकवन्दकालनायिगीगा. पागियांगुदितवजांकीनधुजं ॥ वायथांविश्वसनाजसूर्य
कावकक्षिन्का. दसुस्यांगुदीतयनहं ॥ ० ॥ नैमत्यांविश्वपथवन्द. दसुस्यांगुदीतयिगुला ॥ यगावगशावजय
थकीन. नलमकृदिनी. गिनगा. नवथावनयगांशवयत् ॥ ॥ ० ॥ शिगा ॥ पूर्वदावर्जकावर्जा. वजांवध्यास्यां

मंजुवर्णं कदम्बं रुजं ॥ यथावत्सविष्टयमसूर्यस्तु वज्रयर्थं किनीति नृणां नवधावनमस्तुतां विधिना
नलारवर्णं रावयत् ॥ ॥ पूर्वविददवदहीया विविधधवनस्तुतिं दहमागन्धर्वो ॥ रुच्यदीयनाक
ससहानानाविकटवध्वनकाकुला ॥ जयनगा गायिनी यरुणा ककससका नानावधालंकारधानि ॥
नागा ॥ ॥ रुच्यवक्रयकनूपा नानावधानि ॥ क्ववना विरावयत् ॥ ॥ गददिजसुपुत्र पूर्वस्यां दिशि
सफाद्यवधसूर्येन कवर्णं सर्वकनायां हानाधनं द्विरुजं ॥ कस्य नोभसंसा नूहासाम ॥ सद्यतनकनायां क्वमूवधः
व ॥ ॥ जूमेया क्कागानूहा मंगानलादिगवर्णं सद्यकर्णनं वामनमूलमालारिनय दधाना ॥ दकि ॥ यमा नूहः
पीतवर्णं सनहानाधना वूध ॥ ॥ नमस्यां गजानूह वृहस्पति ॥ गोवर्णं नकमालाकमधुलूधना ॥ ॥ यश्चिमस्यां

[illegible]

[illegible]

मृगवाहन. ध्वजधरा. वायू ४॥ ॐ ह्रीं न्यां वृषासनादिना. शिखूलकया लघनं ॐ ह्रीं न्या ॥ अस्य वामपा. ह्येदं ह्रीं न्या ४
 पीतावरुर्मूर्खा. रुद्रा. मूक. सुगह. कवायां रुद्रा. ॐ ह्रीं न्या. दधु. कमं तुलधनं वक्रा ॥ नैमल्य वनू. हाथामध्यापी. तवमुथे
 वनालंका नवगी. कनककूं. रासु. वसंधना ४॥ तस्या वामपा. ह्येदं ह्रीं न्या. म४ कनकालंका नवान्. स्वन्नरु. टकधना वमसि
 गा ४॥ प्रवंहगा. समलु. लया. नरा. वयत् ॥ ॥ तगा. मू. न्या. म४ ४॥ ॐ ह्रीं न्या. ४ ह्रीं स४ स्वादा ॥ प्रवदू. स्यां ॥ वृ. ह्रीं न्या. ४४
 ४॥ मं. द्या. नथा ४॥ गं. वक्रा ॥ ॐ ह्रीं न्या. ४॥ तगा. द. दय. रु. ॥ प्रका. नल. ह्रीं न्या. नामाला. कधा. रु. रु. विला. ह्रीं न्या. सत्व. सम. य. स
 त्वं. की. नती. नमि. व. सम. वसी. रु. गं. दृ. रु. ॥ ॥ अरि. ध. कं. धार्थ. यत् ॥ अरि. धि. रु. मां. सर्व. गथा. गगा. ॐ ह्रीं न्या. ॥ य
 था. हि. जा. तगा. गथा. दि. ४॥ अरि. ध. कान. न. वे. वा. यना. दि. न. कू. टं. स्व. सि. न. सि. व. रु. दृ. रु. ॥ ॐ ह्रीं न्या. सना. स्व. रा. वा. ल. का. हं ॥

आलिंगनमूला ॥ आकर्षणपूजा ॥ यं लांघं सुग ॥ जननी सर्वसत्त्वानां सर्वलाकवकाविही ॥ यंचनकानमः ॥ स्यामि सर्वसः
त्वार्थसिद्धयत् ॥ नवगहनमसुखं सर्वसत्त्वपदायित ॥ यथासंभाषमाणनसत्त्वानां जायते ह्युरं ॥ अष्टविंशतिनकना
सकसकदिशिस्तिगा ॥ तान्नमस्यामिवेश्वा सर्वला ॥ यसां गय ॥ लाकपालं नमस्यामि दिग्बिदिशुवावास्तुगा ॥ यथा नः
काविधानतनसत्त्वामुसुखसर्वदा ॥ ॥ गगाललाटकधृदसु ॥ हितनकाहिगान् ॥ ॐ अ॥ हूं कावाननिविक्षयत्
॥ गियावत् ॥ यं रावयत् ॥ गगानायिताकृत्तुवीरुकिनक्षमालिकंथाकृष्टयूनकागगहस्त्रायितं समयसत्त्वमधु
लं ॥ छिदं ह्यनसत्त्वमधुलमवलाक ॥ अर्घोदिपूजायं लांघं सुग ॥ जाय ॥ पूर्ववत् अर्घोदि ॥ पूजायं लांघं सुग ॥
॥ गगावलिरावता लखतस्यं ॥ वलिराहुं ह्यनतां रावयत् ॥ ॥ यं कावहवायूमधुलं वनत्यकाकां किं ॥

का
ह

[illegible]

विद्या. गणेशो मन्त्रकृष्णली. जयवाजिनामदादवी. कावकली मन्त्रावला. गणेशधन्यामन्त्रावला. पञ्चकूष्मलि
वद. ॥ पूष्यदंती मन्त्रिदूता. सुवर्णकली वयिंराला. ॥ मन्त्रावला गणेशधन्यावद्विदूता. ॥ वाकसक
ऊगाधेव. वृद्धा ४ दिगी कनायकनायिका. ॥ ॥ गणेशधन्या. ॥ कालिकनालि. कृष्णालि. ४ दिगी. कमलादिता
विगी. मन्त्रिकलि. ४ दिगी. मन्त्रिद्विद्विंराला. ॥ लं वयल. थकाल. पाहिकल. ४ दिगी. ॥ यमदूती. यमला. कसि. ४ दिगी. ॥
रुद्रासनि. पति. ४ दिगी. ॥ गणेशधन्या. ॥ पूष्यधन्या. ॥ वलि. दास्यामि. नका. कनू. मन्त्र. सर्व. सत्त्वानां. व. ॥ सर्व. कथा. पद. वय. ४ दिगी. ॥ जीव. ४ दिगी.
वय. ४ दिगी. ॥ य. ४ दिगी. ॥ सुवदा. ४ दिगी. ॥ सिध. ४ दिगी. ॥ मन्त्र. ४ दिगी. ॥ दान. ४ दिगी. ॥ अमू. कस्य. ४ दिगी. ॥ य. ४ दिगी. ॥ कनू. ४ दिगी. ॥
य. ४ दिगी. ॥ पूष्य. ४ दिगी. ॥ लं. ४ दिगी. ॥ व. ४ दिगी. ॥ कल. ४ दिगी. ॥ मन्त्र. ४ दिगी. ॥ धू. नि. ४ दिगी. ॥ य. ४ दिगी. ॥ दव. ४ दिगी. ॥ ल. ४ दिगी. ॥ मन्त्र. ४ दिगी. ॥ ल. ४ दिगी. ॥ थिल. ४ दिगी. ॥ स्वा. ४ दिगी. ॥ न. ४ दिगी. ॥ ४ दिगी. ॥ कनू. ४ दिगी. ॥ अ. ४ दिगी. ॥ वि. ४ दिगी. ॥ व. ४ दिगी. ॥ स. ४ दिगी. ॥ व. ४ दिगी. ॥ ॥

विधिध्वं पूजा. महलंद वंत वगदं धति पूजा ॥ ॥ पति सनाया नऊ नायू नल दन. ऊऊं खानगायू धूप कर्पूव ॥
चित्तोत्थ ॥ रुत पीयंगु ॥ मधि वन वरु ॥ दीप धल ॥ दक्षणा डासाया वरु. उगुति दूद. ऊर्ध्व दन ॥ १ ॥ मसदासः
वमर्द निया ॥ नऊ कुरु नल नील. धूप कुरुनी ॥ चित्तोत्थ ॥ ऊऊं मखान साक ॥ रुत गुम मसी ॥ उगुति वाक ॥ मधि
वयनाधि ॥ दीप सायिता. सामल विकं ॥ दक्षणा डासा विंवऊ ॥ ऊर्ध्व नील ॥ २ ॥ मसदा मायूनीया ॥ नऊ यथा ॥ नल प
यनाग ॥ धूप यंवगंध. चित्त कंकम. खान्ग याव रुत. किमसी. उगुति. कसि. धनि. मधिवल्लति. दीप ययी डायीका
विकं ॥ दक्षणा डासा. विनल ॥ ऊर्ध्व. पयनाग ॥ ३ ॥ मसदा वरिया नऊ वादू ॥ धूप मीन ॥ चित्त वूडा ॥ ऊऊं खान. डाव
नल मल ॥ रुत तडासि. उगुति वाक. मधि नानी. ऊर्ध्व मव ॥ ४ ॥ मसदा मरुत सावणीया. नऊ कादू ॥ धूप कक्षनीच

का
३

ननकवदन ॥ ऊर्जस्वान्कादू ॥ नलनूगुनि ॥ रुलकालाजंवीरुगुनि ॥ साधनसधिमथ ॥ दीयनकपकाविकं ॥ दक्ष
आसाविंयम ॥ अर्घककटन ॥ ७ ॥ धदासैमैअर्थथनसिजनया ॥ ॥ आदित्यया नऊकादू ॥ धूपकंदव
चिगकंकुम ॥ ऊर्जस्वान्कादू ॥ रुगुनि ॥ कालजा ॥ रुलमीकसी ॥ मधि ॥ धावाय ॥ दीयल्काविकं ॥ दक्षविंमावासा ॥ अ
र्थसिजल ॥ वीदिसांडा ॥ १ ॥ सामया नऊठुयू ॥ धूपकंददा ॥ विगकपून ॥ ऊर्जस्वांठुयू ॥ रुगुनिधनि ॥ रुलमक ४
सी ॥ मधि ॥ मधि ॥ अर्घयागडासाया ॥ दीयठुयू साधन ॥ विदिरायुदास ॥ अर्घमृतिगदयनि ॥ दक्षदक्ष ॥ २
॥ अर्गानया नऊकाडं ॥ धूपघूगू ॥ विग ॥ नकवदन ॥ ऊर्जस्वांकाडं ॥ रुगुनि ॥ वाकू ॥ रुलनांसि ॥ मधिसूमधि ॥ अर्घया
गसिजलया ॥ दीयकाडं ॥ पकाविकं ॥ अर्घपूल ॥ गदयनि ॥ थूसा ॥ दक्षधूसा ॥ ३ ॥ वृधया नऊपीर ॥ धूपकंक

म. चित. गोवाचन. ऊर्जं स्वां पीत. सुगुणि धनसाधन. रुत. ममसि. मधिमथ. अर्घ्याण लूया. दीय. काविकं वीदिः
लीका. गुह्यपतिल. अर्घलं. दक्षाल. ४ ॥ वृहस्पतिया. नऊ. पीत. धूप घृतमधू. चित. पंचगंध. ऊर्जं स्वां पीत.
सुगुणि. धनिवाकू. रुत. तडासि. मधिरिनि. दीय धन. वीदि. तडा. गुह्यपतिल. अर्घ्याण लू. दक्षाल. कायनं. ॥
५ ॥ लुकाया. नऊ. यु. धूप नील. दीय धन. ॥ अर्घ्याण तडासाया. वीदि. कयगुलि. गुह्यपतिल. सन. ॥ दक्षाल. सन.
नल. मति. ॥ ६ ॥ लानिश्चनया. नऊ. नील. ॥ धूप गंधन. ॥ चित. अगुलि. ॥ ऊर्जं स्वां. दाकू. सुगुणि. गुठ मांस. रुत. गुम.
मसि. साममेधि. दीय सामविकं. अर्घ्याण नयागु. वीदिमा. गुह्यपतिल. कयगुसा. दक्षिण. कयगुसां. ॥ ॥ ना.
दूया. नऊ. नील. धूप. चानवात. चित. सकतां. ऊर्जं. स्वां. दाकू. ॥ स. ॥ सुगुणि. ना. दा. रुत. क्रिनसि. ॥ ग्वलमधि. ॥ अर्घ.

क
७

नाडाता ॥ अर्घ्यपात्र कल ॥ वीदिचात गृहपति खन ॥ दक्षिणा ना खन ॥ ६ ॥ कुरुया नरु धूम ॥ धूपशील चि
त कसुनि ॥ ऊर्ज स्वां नाता ॥ अगुति मूकसा घन रुल धाव चयनामधि दीपसकतां चिकं ॥ अर्घ्य कन अर्घ्यपात्र सीक
नया वीदि कल गृहपति धानस दक्षिणा धानसं ॥ ७ ॥ अरुमया नरु यु धूपशील चि विरा कर्णूल ऊर्ज स्वां
कुरु युगुति दूधन रुल चाकसी मधि शायुतामल अकुरु दूधन मधि अर्घ्यमधिक ॥ अर्घ्यपात्र डादाया ॥ ८ ॥
दीप शायुतामचिकं वीदि अकुरु गृहपति सिंहासं दक्षिणां सिंहासं ॥ १० ॥ अग्निनवगृहपूजादानविधिधुरं

॥

॥

॥

वि नंदिन ययं वा वरुथवा सा वि नं सा वि नं सुखं क न न प र पा या का क न न वि उं रु व नि । ॥ उं ऊं औं हूं व क्र
हूं रु द स्वा हा ॥ छि ब्र ह्म द य ना रि दि था न जा य सर्व भा ग व का ॥ ॥ उं हूं ष य वि ष यं वा ष य वि स नं वा वो ल्यं ओ वि
स सा ख स कि स ल रु द धा ल द पि व क ला स जा व वि ष डि ० क ला स हा हूं ॥ वि ष द न व ॥ ॥ कृ श मा धी रु बि डा रि
मू ना हो ल व म्भ क व रा क च व मू र्कं व सर्वा ष धी क सू या न ॥ ॥ उं यूं लूं हूं ॥ अ ह्म स्तु त्सु ष य जा य य स ग रु
नि क्रिय रु उ चा ट नं रु व नि रु रु क हां ॥ ॥ उं न मा का म द वा य व हा क हा सा रा गं म रि दं ष यि म न मा रु नी अ म
कं रु

५१

आध्यात्मिक	
३१४	

ASIA ARCHIVES